वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

सूचना पत्र

GDN 4

अंक 1 / क्रमांक 4 / अप्रेल 2011

तहरीर चौक में क्रान्तिकारी क्षण

मोना अबाजा

अरब क्रान्तियाँ : कर्ता कौन?

सारी हनाफी

योकोहामा : आशाओं का द्वीप

कोईची हासेगावा

> महानगरीयतावाद को चुनौती

> असमानता पर सम्मेलन

> मैक्सिको नगर में आई.एस.ए. की कार्यकारिणी की बैठक

> सीमाओं से रहित

> टर्किश समाजशास्त्रीय समिति : 20 वर्षीय समारोह

> यूरोप में राष्ट्रीय समितियाँ

> इतिहास का कोना : मैक्सिको 1982

> मानवाधिकार : समाजशास्त्री होने का अपराध–बोध ?

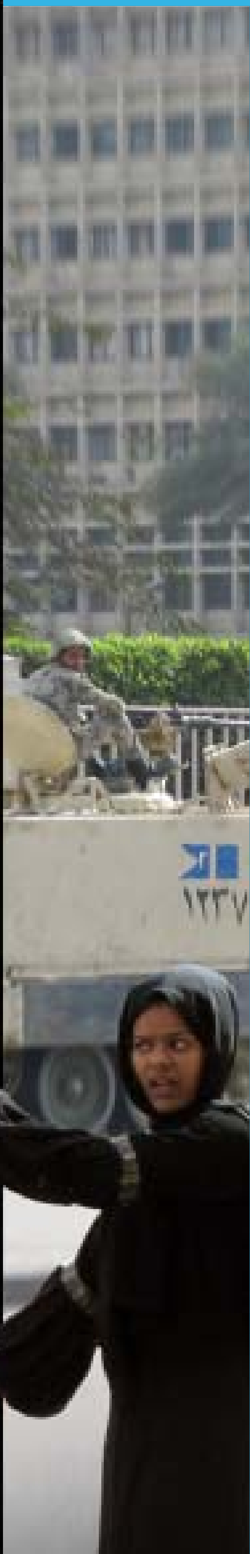

International Sociological Association

> सम्पादकीय

हमारे द्वारा किये गये पिछले प्रकाशन के बाद से विश्व बदल गया है। समूची पृथ्वी पर अनेक काहिरा उत्पन्न हो रहे हैं। विचारक, निर्णायक एवं विधि विशेषज्ञ अभी यह स्पष्ट नहीं कर सके हैं कि क्या अरब विद्रोह को क्रान्तियों की संज्ञा दी जाय। लेकिन अरब विद्रोहों ने यह अवश्य साबित किया है कि सामाजिक आन्दोलनों के प्रादुर्भाव का पूर्वाभास लगाना कितना मुश्किल है। हम उनके उभरने के उपरान्त उनके प्रकट होने व फैलने के तरीकों को बेहतर रूप में समझने में समर्थ हैं। अतः हमारे दोनों मुख्य आलेख क्रान्तिकारी प्रक्रियाओं पर केन्द्रित है। मोना अबाजा यह वर्णन करती है कि जनवरी–फरवरी 2011 में तहरीर चौक में व उसके आसपास होने में कैसा महसूस होता है। जबकि सारी हनाफी ट्यूनिशिया एवं मिस्र में सामाजिक बदलाव के लिए सामाजिक कर्त्ताओं के संयुक्त संघर्ष की व्याख्या करते हैं।

हमारा तीसरा आलेख हमारे ध्यान को मानवीय भूकम्पों से प्राकृतिक विपदा की तरफ ले जाता है जिसने जापान को तबाह कर एक महत्वपूर्ण आणविक दुर्घटना को जन्म दिया। 15 वर्षों से कोइची हासेगावा जो एक पर्यावरण सामाजशास्त्री हैं, यह प्रश्न पूछते रहे हैं कि क्या जापान को अपनी आणविक नीति बदलने के लिए एक ओर चेरनाबिल चाहिए ? हमें अभी तक इस प्रश्न का उत्तर पता नहीं है। सन् 2014 में योकोहामा में होने वाली आई.एस.ए. की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष होने के नाते, डॉ. हासेगावा ने मेक्सिको नगर में कार्य–कारिणी की बैठक में भूकम्प और सुनामी के प्रति जापानी प्रतिक्रिया के बारे में भावपूर्ण भाषण दिया। हम उसे यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। अपने स्तर पर आई.एस.ए. कार्य–कारिणी ने 2014 में होने वाली कांग्रेस की सफलता के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दुगुना कर दिया है।

इस अंक में हम 21 से 25 मार्च तक हुई कार्यकारिणी के विचार विमर्श तथा असमानता पर रॉकेल सोसा एलिजागा, उपाध्यक्ष कार्यक्रम, द्वारा आयोजित समानान्तर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का प्रतिवेदन प्रस्तुत कर रहे हैं। अपने इतिहास के कोने में, जेनिफर प्लाट ने 1982 में हुई मेक्सिको सिटी में ख्यातनाम विश्व कांग्रेस के बारे में लिखा है। यह पहली बार था कि आई.एस.ए. ने अपनी विश्व कांग्रेस का आयोजन तृतीय विश्व के एक देश में किया।

इस आयोजन ने अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र के बारे में चर्चाओं का एक दौर शुरू किया जो अभी तक चल रहा है। उदाहरण के तौर पर, इस अंक में सुजाता पटेल विविध राष्ट्रीय परम्पराओं की दृष्टि से वैश्विक समाजशास्त्र व महानगरीयतावाद के प्रश्न को उठाती हैं। हमारे पास यूरोपीय समाजशास्त्रीय समिति, टर्किश समाजशास्त्रीय समिति एवं बिना सीमाओं के समाजशास्त्रियों की अमरीकी शाखा (यू.एस. ब्रान्च ऑफ सोशोलोजिस्ट्स विदाउट बार्डर्स) के प्रतिवेदन भी हैं। अंत में, समाजशास्त्रियों के मानवाधिकार के उल्लंघन के विषय (टर्की एवं हंगरी से मामलों के साथ) पर एक नया स्तम्भ (Column) प्रस्तुत है।

हम लगातार व्यापक होते अपने श्रोताओं तक पहुँचने के लिये सतत प्रयास करते रहेंगे। अब हमारा फेसबुक पर लोकप्रिय पृष्ठ है और साथ ही वेबसाइट भी अपने नये अवतरण (look) जिसके एक खण्ड में डिजीटल वर्ल्डस (Digital Worlds) भी सम्मिलित है, तैयार है। सारी हनाफी, मोनीर सायदानी और ईश्वर मोदी के प्रयासों से ग्लोबल डायलाग (वैश्विक संवाद) अब अरबी और हिन्दी सहित कुल 9 भाषाओं में प्रस्तुत है। समाजशास्त्र अब विकास गति प्राप्त कर चुका है (Sociology is on the move) ।

ISA website

facebook

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय 2

तहरीर चौक में क्रान्तिकारी क्षण 3

अरब क्रान्तियाँ : कर्ता कौन ? 6

योकोहामा : आशाओं का द्वीप 9

> परिचर्चा
Debate

महानगरीयतावाद को चुनौती 12

असमानता पर सम्मेलन 14

> सभायें एवं समितियाँ
Meetings and Associations

मैक्सिको नगर में आई.एस.ए. कार्यकारिणी की बैठक 15

सीमाओं से रहित 17

टर्किश समाजशास्त्रीय समिति : 20 वर्षीय समारोह 18

यूरोप में राष्ट्रीय समितियाँ 19

> विशेष स्तम्भ
Special Columns

इतिहास का कोना : मैक्सिको 1982 8

मानवाधिकार : समाजशास्त्री होने का अपराध–बोध ? 20

आवरण छायाचित्र मोना अबाजा

तहरीर चौक पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन
छायाचित्र मोना अबाजा

> तहरीर चौक में क्रान्तिकारी क्षण

मोना अबाज़ा, अमेरिकन विश्वविद्यालय, काहिरा

जनवरी की 25 तारीख को जब वह उत्प्रेरक प्रदर्शन हो रहा था मैं काहिरा में ही थी। मैंने प्रदर्शन में भाग नहीं लिया था। पिछले कई सालों से मैं राजनैतिक रूप से सक्रिय नहीं हूं। मुझे स्वीकार करना चाहिये कि अपने आप को रोकने के पीछे पिछले राजनैतिक प्रदर्शनों में व्यक्त हिंसा और बर्बरता प्रमुख कारण रहे हैं।

प्रदर्शनकारियों के प्रति पुलिस पहले दिन से ही निर्दयी रही थी। प्रदर्शन के पहले दिन से सक्रिय रहे मित्रों को वह हिंसा याद है। रबर की गोलियां, तेज पानी की बौछारें एवं बड़ी मात्रा में अश्रुगैस के गोले प्रदर्शनकारी भीड़ पर छोड़े गये थे। शहर जल रहा था। अश्रुगैस के विषाक्त बादल शहर में कई दिनों तक महसूस किये जा सकते थे। बड़ी संख्या मे हताहतों के अलावा तीन लोगों की मृत्यु भी 25 जनवरी को होना बताई गई।[1]

मुबारक ने रेलों के राष्ट्रव्यापी संचालन को अपंग कर दिया था। प्रदर्शन पर नियंत्रण के इस अदूरदर्शी तरीके से गुस्साये लोगों को शहर मे आने से रोकने का यह तरीका न केवल पूरी तरह से विफल रहा बल्कि लोगों की सड़कों पर मौजूदगी 25 जनवरी के बाद बढ़ती ही गई। प्रदर्शन हठीले रूप से जारी रहे। हर दिन लोगों की बढ़ती भीड़ ने काहिरा की गलियों पर कब्जा जमा लिया। वे लोग चौक की तरफ बढ़ रहे थे। पुलिस थानों पर आक्रमणों के साथ शहर विध्वंस हो रहा था। ठग सभी जगहों पर थे और शहर के विभिन्न हिस्सों में लूट मची हुई थी। पुलिस के हिंसक होने के साथ–साथ प्रदर्शनकारी भी अधिक दृढ़संकल्पित होते जा रहे थे और गलियों में उनकी उपस्थिति भी बढ़ती जा रही थी। एलेक्जेंड्रिया, श्वेज, पोर्ट सैड़, मनसुरा, महल्ला–अल–कुब्र आदि शहरों में भी गुस्साए हुए प्रदर्शनकारियों की इसी प्रकार की विशाल बगावत देखी जा रही थी। प्रदर्शनकारियों ने काहिरा के शुब्रा, मैटेरिया, बलाक, ढ़ोकी, मोइनदेशिन, नसरनगर और हैलीपोलिस आदि क्षेत्रों को अलग–थलग कर दिया तथा 'ब्रिज ऑफ द सिक्स ऑफ अक्टूबर' एवम 'कसर अल–निल ब्रिज' को अवरुद्ध कर दिया। नृशंस मुठभेड़ें दर्ज की गई। प्रतिबन्धों की शासकीय निर्दयता के प्रति लोगों का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था और इसी के साथ उसको रोकने की उनकी इच्छाशक्ति भी। इस बार स्थितियां भिन्न होंगी, ऐसा कहा जा रहा था। प्रदर्शनकारियों ने अपना भय खो दिया था, वे मोर्चाबन्दी करके प्रतिरोध कर रहे थे और काली पुलिस की टुकड़ियों का सामना होने पर सामुदायिक प्रार्थना करते थे तथा आक्रमण होने पर पथराव करते थे। वे अपने ऊपर दौड़ती पुलिस की हरी गाड़ियों से भयभीत नहीं थे। तब पुलिस बल ने भयभीत होकर पीछे हटना शुरू कर दिया क्योंकि वे भी लोगों के सघन एवं एकजुट बढ़ाव एवं भयहीनता का सामना नहीं कर पा रहे थे। वे शक्तिशाली परन्तु शान्तिप्रिय भीड़ से बच कर भागने लगे। अचानक सारा पुलिस बल गायब हो गया। प्रदर्शनकारी एक दिन जागे तो उन्होने पाया कि सारे शहर में एक भी पुलिसवाला नहीं है। तभी सेना अपने टैंकों के साथ शहर में घुसी।

मुझ जैसे बहुत से लोग, जो कि राजनैतिक रुप से सक्रिय नहीं थे और प्रदर्शनकारियों को समाप्त करने के लिए की जाने वाली हिंसा से डरे हुए थे अन्ततः चौक पर जाने के लिए तैयार हो गए। मध्यमवर्गीय माताऐं सड़कों पर उतर आईं। मेरे मित्रों के पुत्र और पुत्रियों ने अपनी जिन्दगियों मे कायान्तरण महसूस किया। ये नौजवान जो अपने अभिभावकों और माता पिता द्वारा किये जा रहे प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहे थे वास्तव में पहले दिन से ही प्रदर्शन कर रहे थे। उन्होंने चौक की जिन्दगी में अपनी नई पहचान प्राप्त की। कई नौजवान "गली की लड़ाई" (street fighting) की अपनी नई खोजी गई योग्यता पर गर्वित थे।

लाखों लोगों का यह प्रथम प्रदर्शन एक आश्‍चर्यजनक ऐतिहासिक क्षण मे बदल गया जिसने खुद मिस्रवासियों को स्तब्ध कर दिया। यह नई प्राप्त की गई आजादी तथा आत्म–सम्मान की सामूहिक ललक पर व्यक्त खुशी थी। मेरे पास यह बतलाने के लिए शब्द नहीं हैं कि किस प्रकार बीसियों लाखों लोगों ने शान्तिपूर्ण तथा व्यवस्थित तरीके से एक मुख्य स्थल : तहरीर चौक की तरफ कूच किया। उनका संगठन आश्‍चर्यजनक था। युवा योजनाकारों ने प्रदर्शन को व्यवस्थित बनाने का एक स्पष्ट निर्णय लिया और शान्ति–पूर्ण तरीके से चौक में घुसते चले गये। यह बहुत ही महत्वपूर्ण था। लोगों की एक दूसरे के प्रति सावधानी चकित करने वाली थी कि

कहीं कुछ गलत न हो जाए। सेना के टैंकों व सैनिकों ने चौक को घेर रखा था। वो पहचान पत्रों की जांच कर रहे थे ताकि कोई सरकारी अपराधी तत्व उनमें शामिल नहीं हो सके तथा चौक में कोई हथियार नहीं ले जा सके। चैक पाइन्ट्स पर पुरुषों एवं महिलाओं को अलग किया गया ताकि उन पर पूर्णत अनुशासित मुबारक विरोधी महिला एवं पुरूष समूहों द्वारा नियन्त्रण रखा जा सके। थैलों और बटुओं की जांच की जा रही थी। चाकू, कैंची तथा अन्य संभावित घातक औजार जब्त किये जा रहे थे। सरकारी अपराधियों की धमकियों के चलते नियन्त्रण चौकियां बढ़ा दी गई थीं। तब सावधानीपूर्ण व्यवस्था द्वारा लोगों को चौक के आसपास पहुचने दिया गया।

> 2 फरवरी का नरसंहार

मेरी बेटी और मेरे लिए 2 फरवरी एक न भूलने वाली तारीख रहेगी। इसके एक रात पहले मुबारक ने साफ तौर पर बुरी और धमकीभरी भाषा मे अपना दूसरा टेलीविजन भाषण दिया। उसने लगातार कहा कि वो अपनी गद्दी नही छोड़ेगा। ऐसा लग रहा था कि उसका गुस्सा शीघ्र ही अवज्ञाकारी राष्ट्र पर उतरेगा। 2 फरवरी की दोपहर मैं, अपनी दो मित्रों व अपनी बेटी के साथ अपने मित्रों से मिलने और कुछ देर उनके साथ रहने की इच्छा से तहरीर चौक गई। मेरी मित्र सामिया ने कहा कि हमें अपने साझा मित्र पियरे से मिलना चाहिये जिसके दो शानदार फ्लैट्स तहरीर चौक को देखते हुए बाब अल–लक गली में तलात हर्ब की नवीं एवं दसवी मंजिल पर हैं। लगभग चार बजे शाम को इजिप्टियन म्युजियम की दिशा से सरकार समर्थकों का सशस्त्र हमला शुरू हो गया। हमने देखा कि कई गम्भीर रूप से घायलों को लोग समूहों में सेना के टैंकों व प्रदर्शनकारियों द्वारा रक्षित चौकियों से ला रहे थे। बहुत से लोगों के सिरों व आंखों मे गोलियां लगी थी। ऊंटों का युद्ध शुरू हो चुका था परन्तु सौभाग्य से प्रदर्शनकारियों ने घुसपैठिये अपराधियों को उनके ऊंटों व घोड़ों सहित गिरफ्तार कर लिया था। तब तक मेरे दोनो मित्रों ने ज़मालेक द्वीप जहां हम ठहरे हुए थे लौटने का निश्चय कर लिया था। मैं अपनी बेटी के साथ यह सोच कर रूक गयी कि उसके साथ लौटना बहुत जोखिम भरा होगा। मैं पहले से ही इतने सारे घायलों को देख कर डरी हुई थी।

लगभग शाम के 5.30 बजे तलात हर्ब स्ट्रीट की दिशा से सरकारी गुण्डों की भारी भीड़ चौक की तरफ बढ़ी। उन्होने पेट्रोल बम फैंके। वे प्रदर्शनकारियों की तरफ गोलियां चला रहे थे और उनके रास्ते में जो भी पड़ा उसे जला डाल रहे थे। विशेष तौर पर उन्होने उन कारों को जला दिया जिन्हे उन्होने उलट दिया था। साफ दिखाई दे रहा था कि आर्मी टैंकों ने कारों को जलाए जाने या गुण्डों के हमलों को रोकने के लिए कुछ भी नहीं किया। मुबारक़ विरोधी प्रदर्शनकारियों ने अपना एक मात्र बचाव, पास ही में पुर्ननिर्माणाधीन होटल हिल्टन की निर्माण सामग्री में से लिए हुए धातु की चादरों से, जांच चौकियों के पास रक्षात्मक दीवार बना कर किया। उनके पास एक मात्र हथियार पत्थरों को उठाकर फैकना ही था। सड़कों पर अव्यवस्था फैली थी और घायल इधर उधर पड़े थे। उस रात यह बताया गया था कि चार लोग मारे गए और सैकड़ों लोग घायल हुए थे। हमने जो देखा उससे यह स्पष्ट था कि मृतकों की संख्या बताइ गयी संख्या से बहुत ज्यादा थी।[2] सौभाग्य से गुण्डों को पीछे धकेल दिया गया और वे चौक में प्रवेश नहीं कर सके।

वह रात हमने पीयरे के फ्लैट में गुज़ारी। पियरे उन सैकड़ों फोटुओं को जो कि उसकी बालकनी से खींची गइ थीं सभी संभावित फेसबुक अकाउन्टस पर लगाने में व्यस्त था। पिछले पांच दिनों से प्रतिबन्ध के बाद उस दिन ही पहली बार इन्टरनेट पुनः चालू किया गया था। पियरे का आकर्षक फ्लैट *बैले एपोक* (Belle Epoque) एक बड़ी शरणगाह में बदल चुका था। कई बिस्तर व कम्बल फर्श पर फैले हुए थे।

उसके दो बड़े फ्लैट्स जो कि चौक के ऊपर थे बहुत सारे लोगों की मेजबानी तथा आवाजाही के काम आ रहे थे। बहुत से फ्रैंच, इटालवी, अमेरिकन तथा मिस्र के रिर्पोटर्स, फोटोग्राफर्स, बहुत सारी माताएं जिनके बच्चे चौक में थे और जवान व बुजुर्ग प्रदर्शनकारी लोग उनमें शामिल थे जो कि हालात बदतर होने पर यहां शरण लेते थे। कई प्रदर्शनकारी जिनसे मैं मिली, अमेरिकन विश्वविद्यालय के मेरे पूर्व विद्यार्थी थे। जिस प्रकार से ये लोग दृढ प्रतिज्ञ योद्धाओं में बदल चुके थे उससे मैं खुश थी परन्तु डरी हुई भी थी। मेरी एक महिला विद्यार्थी पिछले चार दिनों से चौक में रह रही थी और पूरी तरह से थकी हुई दिखाई दे रही थी। अन्य प्रदर्शनकारी मेरे मित्रों के पुत्र तथा पुत्रियां निकले। प्रदर्शनकारियों के ऐसे मित्रों का भी जो फ्लैट में किसी को भी नहीं जानते थे, स्वागत था। रात में जब हिंसा बढ़ जाती थी तो फ्लैट में आने वाले प्रदर्शनकारियों की संख्या भी बढ़ जाती थी (हम लगभग 50–60 व्यक्ति थे)। कुछ प्रदर्शनकारियों के चेहरों, हाथों और पैरों पर जख्म थे।

एक अन्य कमरे में एक टीवी तेज आवाज में लगातार चल रहा था। हम लोग इस कमरे में से लगातार आ जा रहे थे। कुछ लोग इस टीवी के सामने थक कर लेटे हुए थे। हमारी सारी चिन्ता और प्रयत्न मुख्यतः इन दो बातों पर एक के बाद एक करके थे – फ्लैट की तीन बड़ी बालकनियों पर लगातार आवाजाही और यह जानने के लिए कि तहरीर चौक पर और उसकी दो सड़कों तलात हर्ब और बाब अल–लक पर क्या हो रहा है – हम बारबार टीवी न्यूज देखने के लिए अन्दर दौड़ते ताकि गुण्डों के अगले आक्रमण की दिशा जानी जा सके। अल–ज़जीरा चैनल यह जानने के लिए सन्दर्भ केन्द्र था कि चौक के आसपास क्या हो रहा है। हम म्युजियम आफ एन्टीक्यूटीज की तरफ से होने वाले आक्रमणों को नहीं देख पा रहे थे और ना ही सिक्सथ ऑफ अक्टूबर ब्रिज से गुण्डों द्वारा प्रदर्शनकारियों पर फैके गये पेट्रोल बमों को, लेकिन हम उन्हे टीवी पर देख पा रहे थे। हमने टीवी पर देखा कि किस प्रकार गुण्डों ने चौक के आसपास पेड़ों पर आग लगा दी तथा इस विचार ने हमें भयभीत कर दिया कि यह आग आसपास की इमारतों में फैल कर रौद्र रूप ले सकती है। खतरे को पहचानने में टीवी स्क्रीन हमारी एक मात्र सहायक थी। लेकिन फ्लैट में मौजूद हम सभी की एक आम धारणा थी कि मुबारक के प्रति हमारी नफरत की कोई सीमा नहीं थी। हम सभी का यही विचार था कि आज का नरसंहार मुबारक के गद्दी नहीं छोड़ने की घोषणा के ठीक एक दिन बाद हुआ है। यदि वह एक और सप्ताह तक रहता है तो नुकसान कल्पना से ज्यादा होगा। उसके अंहकारवादी पागलपन की कोई सीमा नहीं थी।

अगर सभी ने नहीं तो हम में से बहुतों ने अपने मोबाईल चालू कर रखे थे (मोबाईल फोन पर से कर्फ्यू या ब्लैकआउट हटा दिया गया था)। सारी माताएं अपने बेटों और बेटियों को चौक में फोन कर रही थीं। वो बतला रही थीं जो कुछ उन्होने टीवी पर चौक में होते हुए देखा। कुछ माताएं उन्हे वापस आने के लिए कह रही थीं। रिर्पोटर्स अपने उन साथियों को फोन कर रहे थे जो कि उनके संपर्क में नहीं थे या शायद चौक के दूसरी तरफ की लड़ाई मे खो गये थे।

वहां दूसरी तरफ चौक उन लोगों से भर गया था जो सुबह होने तक चौक के केन्द्र के चारों और चक्कर लगा रहे थे। औरतें और बच्चे चौक के मध्य भाग में डेरा डाले हुए थे। कुछ लाउडस्पीकर्स जो कि पास ही ओमर मकरान मस्जिद पर लगे हुए थे धार्मिक नारे लगा रहे थे, दूसरे लाउडस्पीकर्स साथ

के दशक के देशभक्ति गीतों को बजा रहे थे। कुछ निश्चित जगहों पर, देर रात को, प्रदर्शनकारियों द्वरा उनकी धातु की चादरों पर लयबद्ध ढोल बजाए जा रहे थे। ये विभिन्न आवाजें बतला रही थी कि प्रदर्शनकारी कितने संगठित हैं। वादकदलों की असंगत आवाजों का मतलब लोगों को जगाए रखने के लिए और आने वाले खतरों के प्रति चेताने से था। अगर हम लगातार उड़ते हुए हैलीकाप्टरों को भी परिदृश्य में जोड़ दें तो यह शोर कुछ भविष्योद्घाटन करता लगता है।

कई माताऐं जिन्हाने पियरे के यहां रात बिताई अपने बेटों और बेटियों जो कि चौक में थे के लौटने का इन्तजार कर रही थीं। जब हम देर रात को खबरों का खुलासा देख रहे थे हमारी आंखों में आंसू थे। एक मां अपने मोबाईल फोन पर बात करते हुए अपनी बेटी से प्रदर्शन को छोड़ने की मांग कर रही थी। यह सब कब खत्म होगा यह सोच कर मैं अपनी बेटी से चिपक गई।

> संक्रामक

इन विचारों को लिखने में और 2 फरवरी की रात की घटनाओं को क्रमशः याद रखने में मेरी बेटी मेरी मुख्य पथप्रदर्शक बनी। ऐसा लग रहा था कि हम दोनों ने एक सी ही समस्या का अनुभव किया था। अपनी याद्दाश्त को जगाने के प्रयत्न में हम एक धुंधली सी बेहोशी का अनुभव कर रहे थे। हम इस बात से सहमत थे कि इस बात का स्थिति के तनाव, हमारे बार–बार चौक का निरीक्षण करने एवंम् टीवी पर लगातार आ रही तस्वीरों को देखने से सम्बन्ध था। मेरी बेटी ने पियरे के यहां बिताई रात को एक फंतासी बताया। एक बात स्पष्ट है कि टेलीविजन की व्यापक तस्वीरों ने हमारी स्मृति को असरदार तरीके से प्रभावित किया है और फलस्वरुप सच्चाई मूर्त हुई है।

अगर ऑडोर्नो और हॉरखाइमर ने मिस्र की क्रान्ति में अल–ज़जीरा की भूमिका को देखा होता तो उन्होने निश्चित रुप से, “संस्कृति उद्योग” एवंम टेलीविजन के तुच्छतापूर्ण प्रभाव के प्रति अपनी भविष्य–वाणी पर पुर्नविचार किया होता। स्पष्टतः क्रान्ति उतनी सफल नहीं हुई होती अगर सेटेलाइट चैनलों ने सरकारी प्रचार/प्रोपे–गेण्डा एवम् वास्तविकता के मध्य लज्जाजनक असंगतियों एवम् सरकारी टेलीविजन के हास्यास्पद झूठ को उजागर नहीं किया होता। सेटेलाइट चैनलों को और अधिक महत्व तब मिला जब सरकार ने फेसबुक, मोबाइल फोन और इन्टरनेट को प्रतिबन्धित कर दिया।

आने वाले सालों में अरब क्रान्ति की सफलता में अल ज़जीरा की अभूतपूर्व भूमिका के अध्ययन हेतु शैक्षणिक शोध कार्यक्रम व्यस्त रहेंगे। क्रान्ति की महान विजय अल ज़जीरा की भी थी। पत्रकारों ने अपनी व्यक्तिपरकता और सडक पर लोगों के समर्थन को छिपाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। उनके दक्ष आन्दोलन और उनके दफ्तरों को लूटने के चतुर पूर्वानुमान और संदिग्ध व्यक्तियों की तेजी से तलाश ने उनकी हीरो की छवि में वृद्धि ही की।

टयूनिशिया, अलजीरिया, मिस्र, यमन, बहरीन, लीबिया और ओमान में चली क्रान्ति की संक्रमित भावना ने संपूर्ण विश्व को सम्मोहित कर लिया। यह केवल टेलीविजन के माध्यम से तस्वीरों के संम्प्रेषण की गति और ताकत को दर्शाता है। विरोध प्रकट करने वाले नारों और उनकी मांगों में जो कि समस्त अरब जगत में आग की तरह फैल गई थी एक स्पष्ट सामान्य सूचक था। अरब क्रान्तियां आत्मसम्मान, पहचान, अन्याय, मुखर भ्रष्टाचार और निरंकुशता जैसे विस्तृत मुद्दों के इर्द गिर्द विकसित हुईं।

वास्तव में मिस्र के लोग अपनी बुद्धिमत्ता और जिन्दादिली के लिए प्रसिद्ध हैं और इसी के चलते यह क्रान्ति बड़ी संख्या में पश्चिम के लोगों को प्रलोभित करने मे सफल रही। निश्चय ही यह एक खूनी क्रान्ति थी, लेकिन ऐसा भी नहीं था। टीकाकारों ने अपने आप को लगातार यह दोहराने से नहीं रोका कि चौक ने अपने आप को उन आश्चर्यजनक व्यंग्यात्मक संगीतकारों एवं नृतकों के लिए एक प्रति–सांस्कृतिक और लोकप्रिय कलात्मक कल्पनाओं के चुम्बकीय केन्द्र के रुप में पुर्न–आविष्कृत किया। मिस्र के प्रसिद्ध अवज्ञापूर्ण “नोक्टा” (मजाकों) और सबसे अधिक चकित करने वाली अनियोजित लोक प्रस्तुतियों ने अपनी सफलता के उच्च स्तरों को यहां चौक में खोज निकाला।

क्रान्तिकारी बच्चों ने पश्चिम को विश्व–बन्धुत्व और प्रजातन्त्र की प्यारी मान्यताओं का एक पाठ पढ़ाया। इन दो अलग अलग दावों के प्रयोग को उन्होंने परिपक्वता की कमी के बचकाने बहाने के कारण अभी तक ग्लोबल साउथ में नकार रखा था। इन मूल्यों ने पुनः एक बार यह साबित कर दिया कि ये केवल पश्चिम तक ही सीमित नही हैं। जब 1968 का मिस्र का आन्दोलन अन्ततः सड़कों पर आया, उसी समय इसका सामना प्रजातियों में अनुवांशिक विकृतियों तथा जर्मनी में संकीर्ण सेरेजीन द्वारा तुर्कों के एकीकरण पर राष्ट्रीय बहस के साथ हुआ। (सेरेजीन घटना पर अध्ययन के लिए देखें Helma Lutz, “From Cosmopolitanism to Public Sociology,” Global Dialogue 1/3)

मिस्र की क्रान्ति की तुलना रुस और चीन की क्रान्तियों से करना अपरिपक्वता ही होगी। लेकिन जो चीज मिस्र की स्थिति को आकर्षक बनाती है वो हैं इन्टरनेट, फेसबुक, मोबाइल फोन्स और ट्वीटर्स जो कि सूचनाओं के शीघ्रतम संभावित संप्रेषण के औजार बनकर उभरे। यह बतलाता है कि किस प्रकार एक विवादित तकनीक जिसका अक्सर नकारात्मक मूल्यांकन ही किया जाता रहा है – जो कि विलासितापूर्ण उपभोक्ता संस्कृति तथा उपभोक्तावादी जीवनशैली की जनक है – का क्रान्तिकारी प्रयोग चिकित्सकीय रुप से पागल अरब तानाशाही के लोह जाल के विरुद्ध किया गया। लेकिन तकनीक यहां केवल एक माध्यम मात्र थी, निश्चय ही संदेश नही थी। माध्यम पूरी तरह गतिशीलता के लिए था, और संदेश था वास्तव में वह जो कुछ भी सड़कों पर हो रहा था। मैनुअल कैसल (Manuel Castells) ठीक ही थे जब वे नैटवर्क समाज के नये मापदण्डों के निर्माण में साईबर स्पेस की भूमिका को इंगित कर रहे थे। वह एक नई सूचनात्मक भाषा और नई नियमावली की बात करते हैं। बहुत से लोगों ने जिन्होने तहरीर चौक देखा था वे इस बात से सम्मोहित थे कि किस होशियारी के साथ 6 अप्रेल के आन्दोलन के युवा प्रदर्शनकारियों ने जिस प्रकार एक बहुत छोटे एवं अत्यंत संक्षिप्त परंतु अति प्रभावशाली मुबारक विरोधी नारों की रचना की थी। यह संक्षिप्त नारे ही वो प्रमुख माध्यम थे जो कि लाखों नहीं तो हजारों समर्थकों को रैलियों में जुटाते थे। कई नारों मे “इरहाल” (छोड़ो), और “बाटेल” (गैरकानूनी), जैसा केवल एक सामान्य शब्द था। क्या यह इलैक्ट्रानिक बोलचाल की कोडयुक्त और संक्षिप्त भाषा का प्रभाव था जैसी कि कैसल ने भविष्यवाणी की थी। इसका कोई वास्तविक उत्तर नहीं है। ■

[1]मृतकों की संख्या निश्चित ही ज्यादा रही है क्योंकि पहले दिन से अब तक सैकड़ों लोग लापता हैं।

[2]बाद में प्रेस ने बताया कि यह संख्या वास्तविक मृतकों से कहीं कम थी। बहुत से लोग अस्पतालों में मरे थे और सरकार ने आदेश जारी किये थे कि मृत्यु प्रमाणपत्र जारी नहीं किये जाएं ताकि मृतकों की बढ़ी हुई संख्या को छिपाया जा सके।

> अरब क्रान्तियाँ : कर्ता कौन ?

सारी हनाफी, अमेरिकन यूनिवर्सिटी ऑफ बेरूत, सदस्य, आई.एस.ए. कार्यकारिणी

छायाचित्र मोना अबाजा

मिस्र क्रान्ति में एकजुटता : हरे रंग में (ऊपर)–''विजयी होने तक क्रान्ति'' तथा नीचे लाल रंग में–''आन्तरिक मंत्रालय में कार्यरत अधिकारियों एवं ठगों से क्रान्ति की रक्षा एवं देश की रक्षा हम गरीब लोग करेंगे।''

गत चार महीनों मे अरब विश्व को राजनैतिक भूचालों ने हिला कर रख दिया है। इन क्रान्तियों ने ट्यूनिशिया और मिस्र के राष्ट्राध्यक्षों को अपदस्थ कर दिया है और अब यह अपनी राह यमन, बहरीन, लीबिया, जॉर्डन और सीरिया की दिशा में बढ़ा रही हैं। मुख्य बात यह नहीं है कि कोई उन क्रान्तियों की सफलता को किस प्रकार परिभाषित करता है, साफ बात यह है कि ये निरंकुश शासनों को राजनैतिक सुधार की तरफ धकेल रही है।

इन क्रान्तियों का महत्व सामाजिक और प्रजातान्त्रिक मांगों की पूर्ति में निहित है। उदाहरण के लिए हमें याद करना होगा कि दो वर्ष पूर्व ट्यूनीशियाई क्रान्ति की शुरुआत गफ्सा शहर में रोटी और रोजगार के लिए प्रदर्शन से हुई थी। ट्यूनिशिया के जार्जिस शहर में विरोधी ब्लागर्स और फेसबुक के प्रयोगकर्ताओं द्वारा राजनैतिक कैदियों को छोड़े जाने और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की मांगें की गयी थीं। ट्यूनीशिया और मिस्र दोनों में युवाओं, विश्वविद्यालय के बेरोजगार स्नातकों तथा कामगार वर्ग द्वारा क्रान्तियों की शुरुआत की गयी थी तथा बाद में इसे सामाजिक और प्रजातान्त्रिक सुधारों से जोड़ा गया।

प्रदर्शनकारियों की बेरोजगारी के प्रति भावनाओं को और नवउदारवादी तथा नव–वशांनुगत शासन के प्रति उनके विरोध को न्याय की भावना, आत्म सम्मान तथा स्वतन्त्रता से जोड़ा गयाः राजनैतिक समूहों तथा दलों से जुड़ने की स्वतन्त्रता, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, धार्मिक व्यवहारों की स्वतन्त्रता तथा सरकार में भ्रष्ट लोगों के विरुद्ध लिखने की स्वतन्त्रता जैसे पक्ष महत्वपूर्ण बने। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि प्रसिद्ध "ट्यूनीशिया का आर्थिक जादू" राजधानी तथा उत्तरी तटीय शहरों में ही था न कि ट्यूनीशिया के आन्तरिक क्षेत्रों तथा दक्षिणी शहरों में भी। अरब के युवा यह महसूस करते थे कि वे '*होमो सेकर*' बन गए हैं। इटली के दार्शनिक जियोंजियो एग्मबेन के मतानुसार '*होमो सेकर*' का अभिप्राय उन भूखे एवं असुरक्षित लोगों से है जो शोषण का जीवन जी रहे हैं और जिन्हें सत्ता ने राजनीतिक अस्मिता से वंचित कर दिया है और साथ ही इस्लातिक सुधार आन्दोलन अल–नहादा, ट्यूनीशिया की कम्युनिस्ट लेबर पार्टी एवं मुस्लिम भाईचारा जैसे समूहों की सम्बद्धता से वंचित कर दिया है। यह विद्रोह इन सब के विरुद्ध था।

जब ट्यूनीशिया और मिस्र के राष्ट्राध्यक्ष, बेन अली तथा मुबारक, प्रभुसत्ता संपन्न बन गये तथा किसी कानून के लागू करने या उसे

स्थगित करने के संबध में अन्तिम निर्णय लेने लगे, चाहे वह किसी की जिन्दगी लेने या जीवन देने का हो, उन्होने ट्यूनीशिया और मिस्र के अधिकारों का हनन किया – गिरफ्तारियां, यंत्रणाएं, हत्याएं तथा अपने राष्ट्रों को आर्थिक रुप से नष्ट करना इस अधिकार हनन का हिस्सा बने।

मेरे द्वारा गत वर्ष संपादित एक पुस्तक "The State of Exception and Resistance in the Arab World" में ट्यूनीशिया के समाजशास्त्री, मोहसन बोआजीजी (Mohsen Bouazizi), ने ट्यूनीशिया के युवकों के विरोध की शान्त अभिव्यक्ति एवं उनकी शासन के विरुद्ध बेपरवाही और उदासीनता के बारे में लिखा। लेकिन मोहसेन बोआजीजी यह नहीं देख पाये कि किस प्रकार मोहम्मद बोआजीजी (Mohamed Bouazizi), जैसे लोग, जो अपने शहर – सिदी बोउजिद (Sidi Bouzid)– के ही थे, किस प्रकार सामाजिक जीवन से इतने अलगावित हो गए कि तोरेन (Touraine) के शब्दों मे एक सामाजिक आन्दोलन की संचालन शक्ति बन गये।

मोहम्मद का शरीर, अन्य युवा ट्यूनीशियाइयों की ही तरह, दमनकारी शासन तथा इसके अनुशासित अधिकारियों के निशाने पर था, जिनका लक्ष्य इनकी राजनैतिक पहचान को नग्न करना था। प्रतिरोधात्मक आत्महत्या करके मोहम्मद विरोध प्रकट करने का एक तरीका बन गया, जिसका प्रभाव शरीर के आत्म–बलिदान से ही प्राप्त होता है। जैसा कि फिलीस्तीनी शोधकर्ता मे जयूसी (May Jayussi) ने कहा है कि इस वक्त हम ठीक वैसे ही हैं जैसे कि वे फिलीस्तीनी अधिकृत क्षेत्रों मे संप्रभु अधिकारियों को चुनौती देते थे और अपमानित करते थे, यहां तक कि बिना पहचान के मार दिये जाते थे – मृत्यु बिना किसी कीमत के। मोहम्मद बोआजीजी और उसके साथी जो कि आत्म हत्या करके मर गये, जिन्होने अपनी उद्देश्यपूर्ण कुरबानियां दी, कर्ता बन गए और अपने इस कृत्य से उन्होने संप्रभुतापूर्ण अधिकारियों से जनता के संबधों को उलट डाला।

हालांकि, बेन अली का शासन समस्त स्थाई दमनों के बावजूद भी एक पूर्ण संस्था नहीं था जो कि सब कुछ नियंत्रित करता हो। आखिर, अक्सर उत्पीड़न कमजोरी की निशानी होता है बजाय ताकत के, जैसा कि हमने देखा कि बेन अली के "शक्तिशाली" शासन को पुलिस के दमनकारी नियमों की पालना के लिए सेना नहीं मिल सकी। विरोध को शांत करने में भी उसकी व्यवस्था असफल रही विशेष तौर से विसर्जितजनों (diaspora) में। यह उन सभी को आशा की एक किरण प्रदान करता है जो प्रजातांत्रीकरण के लिए संघर्षरत हैं – यह सीखने के लिए कि किस प्रकार परिवर्तन लाने के लिए शासन की कमजोरियों का प्रयोग किया जा सकता है।

दरअसल, इन अरब क्रान्तियों का प्रतीकात्मक आयाम उल्लेखनीय है। मिस्र में क्रान्तिकारी युवा शिक्षित व्यक्ति हैं –– पुरुष और महिलाएं, मुस्लिम और ईसाई जो कि अपनी क्रान्ति के संचार के लिए मोबाइल फोन तथा लेपटाप का प्रयोग करते है और इसी के साथ हस्तनिर्मित संकेतों का भी। यह क्रान्ति पूर्णतया स्वदेशी है। वहां कोइ भी यूएसएड (USAID) यां अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेन्सियां नहीं है जो कि चमकदार तख्तियों अथवा विवरणिकाओं के लिए धन दे रही हों अथवा पांच सितारा होटलों मे कार्यशालाओं के आयोजन कर रही हों। इसके ठीक विपरीत, उस कठोर शासन के समर्थक अपने घोड़ों, ऊटों, ईटों, चाकुओं तथा लाठियों के साथ आए थे।

अरब क्रान्तियों में अरब–इजराइल संघर्ष अनुपस्थित नहीं था। मिस्र और ट्यूनीशिया दोनों के शासन जो कि 'संयम की धुरी' कहे जाने वाले हिस्से के अंग हैं, का राजनैतिक प्रबंधन लोकप्रिय भावनाओं के गहरे तक विपरीत था जिसे कि वे इजरायल की औपनिवेशिक परियोजना तथा गाज़ा की घेराबंदी के लिए हरी बत्ती के रुप में देखते हैं। मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि अल–एहराम जैसे किसी सरकार समर्थक अखबार में भी 4 जनवरी को नेतानयाहू के स्वागत करने के लिए मुबारक की आलोचना की गई क्योंकि इसके एक दिन पूर्व ही इजराइलियों नें पूर्वी येरुशलम मे चार मकानों को ध्वस्त कर दिया था तथा गाजा मे बमबारी से तीन फिलिस्तीनी मारे गए थे।

इसलिए, ये क्रान्तियां इजराइली भय पर भली भांति आधारित हैं। इन नये अरब शासनों की लोकप्रिय वैधता होगी जिसे किसी पश्चिमी ताकत के समर्थन की आवश्यकता नहीं होगी। इस बात की अधिक संभावना है कि मिस्र अपने आप को अरब क्षेत्र (Pan-Aarbism) की एक बढ़ती हुई ताकत के रुप में स्थापित करेगा जिसमे कि फिलिस्तीनी लोगों की इजराइल की औपनिवेशिक परियोजना के विरोध की ईच्छाशक्ति को मजबूती मिले। साक्षात्कारों में प्रदर्शनकारियों द्वारा बार बार एक शब्द 'आत्म–सम्मान' का प्रयोग किया जा रहा था, जिससे कि उन्हें बेदखल सरकारों द्वारा वंचित किया जाता रहा था। ये अरब क्रान्तियां हमारे विचारों को खुराक देती हैं कि अरब विश्व में किस प्रकार के सामाजिक आंदोलन उभरते रहे हैं तथा उनके आंतरिक और बाह्य कर्ताओं के पारस्परिक प्रभाव क्या होंगें।

> सामाजिक आंदोलन के कर्ता

इन क्रान्तियों में कर्ताओं के दो समूहों नें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहला, उन शिक्षित और गैर–सम्बद्ध युवकों का जो कि उन राजनैतिक दलों तथा संगठनों से मजबूती से मिल गये थे जो परंपरागत रुप से ऐसे आंदोलनों को आवश्यक गति तथा लामबंदी प्रदान करते हैं। दूसरा, वहां पर कामगार वर्ग था चाहे वो यूनियनों का सदस्य था अथवा नहीं। बहुत से विश्लेषक जाने या अनजाने में बादवाले समूह को भूलते हैं तथा काल्पनिक रुप से युवाओं को वर्गहीन और गैर–वैचारिक बतलाते हैं। वास्तविकता में ट्यूनीशिया और मिस्र की ये क्रान्तियां एक ऐसे उभरते हुए सामाजिक आंदोलनों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो कि सामाजिक वर्ग पर आधारित शास्त्रीय रुप को एक नए प्रकार से जोड़ता है जिसमें नागरिक अधिकारों की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष हो। कामगार वर्ग की पहचान के अलावा, लोग अभिव्यक्ति की ताकत से लैस हो कर, सामाजिक एकीकरण और विघटन के बीच अपनी निर्मिति करते हैं, जिसे तोरेन (Touraine) प्रतिबद्धता और अप्रतिबद्धता कहते हैं। उदाहरण के लिए 6 अप्रेल के आन्दोलन के कुछ कार्यकर्ता जो कि मुस्लिम भाईचारे के सदस्य हैं, लेकिन उन्होंनें भी भाइचारे की कार्यवाइयों की आलोचना की कि किस प्रकार वे बहुत शीघ ही पुराने शासन से बातचीत में शामिल हो गए।

ट्यूनीशिया में मोहम्मद बोआजीजी के कार्य ने विद्रोह की चिंगारी सुलगाई जो शुरु तो एक असंगठित और सहज घटना के रुप में हुई थी लेकिन उसे शीघ्र ही श्रमिक संघों ने अपना लिया। दी जनरल यूनियन ऑफ ट्यूनीशियन वर्कर्स शासन के साथ बातचीत में प्रभावशाली रही थी। उत्तरी ट्यूनीशिया में, खास तौर से राजधानी में, यूनियन के नेता शासन के साथ बातचीत कर रहे थे वहीं उनके साथी दक्षिण में इसका विरोध कर रहे थे। बार एसोसियेशन ने भी युवाओं के अलावा सभी उम्र के लोगों तथा क्षेत्रों मे तथा राजधानी ट्यूनिश मे प्रदर्शनों को फैलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सामाजिक आंदोलनों में पूरे अरब तथा इस्लामिक संसार में, मिस्र से पाकिस्तान तक, वकीलों तथा जजों के विशिष्ट स्थान को कोई भी देख सकता है।

जहां तक मिस्र का सवाल है क्रान्ति की शुरुआत 6 अप्रेल के आंदोलन से हुई जो कि अल–महाला अल कुब्रा में श्रमिकों की हड़ताल और युवकों की एकजुटता से शुरु हुई। उन लोगों नें हजारों प्रदर्शनकारियों को जुटाने के लिए फेसबुक, ट्विटर और एसएमएस का प्रयोग किया और राजनैतिक विरोध की मदद से उन्होंनें लाखों प्रदर्शनकारियों को मिस्र के अल–तहरीर चौक, एलेकजेन्ड्रिया, स्विस

(जहां कि कामगारों का प्रदर्शन प्रमुख था), जाकाजिक, मनसैारा आदि जगहों पर पहुंचाया। प्रत्येक प्रदर्शकारी एक पत्रकार बन गया जिसके हाथ में एक मोबाइल था और वह सरकारी मीडिया को दरकिनार करते हुए सरकारी दमन की तस्वीर खींच रहा था। दरअसल हम क्रान्तियों के उस दौर में हैं जिसमें राजनैतिक और नागरिक अधिकार वैचारिक दावों का स्थान ले रहे हैं। अरबी शासनों और इसी तरह कुछ अरबी और पश्चिम के विद्वानों और पत्रकारों की सोच है कि अरब की सड़कों पर भीड़ केवल राजनैतिक इस्लाम के द्वारा ही जुटाई जा सकती थी। ट्यूनीशिया और मिस्र दोनों के मामले दर्शाते हैं कि यद्यपि इस्लामी आन्दोलन महत्वपूर्ण हैं, परन्तु वे अपने आप में सफल नहीं हो सकते तथा किसी हद तक उन्हें विपक्षी समूहों से गठबन्धन की भी आवश्यकता है। इस्लामी आन्दोलनों की वास्तविक ताकत, इस एकपक्षीय नारे 'इस्लाम ही समाधान है' से परे जाकर स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र के लिए विपक्षी दलों से हाथ मिलाने में मौजूद है।

लेकिन फिर मानवाधिकार संगठनों तथा नागरिक और गैर–सरकारी संगठनों (एन.जी.ओज.) के बारे में क्या ? बहुत से दानदाता और अन्तरराष्ट्रीय संगठन नागरिक समाज के बारे में अपने दृष्टिकोण को इन्ही गैरराजनैतिक संगठनों तक सीमित रखते हैं और यह सोचते हैं कि ये ही परिवर्तन की हवा लाएंगें। इन्ही संगठनों ने हताहतों और मृतकों की संख्या की सूचना विभिन्न संघों तथा विरोधी दलों तक पहुंचाने में सहायक भूमिका निभाई और उन्होंने ही सरकारी तथा गैर–सरकारी दोनों स्तरों पर अन्तर्राष्ट्रीय शक्तियों के शासन के खिलाफ दृढ़ रुख अपनाने के लिए उकसाया। इस प्रकार राजनैतिक दलों, संगठनों और एन.जी.ओज. में तालमेल नागरिक समाज का एक महत्वपूर्ण पक्ष था। यही समय है कि दानदाता जो कि गैर सरकारी संगठनों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करते हैं अपना पूर्ण सहयोग ऐसी संस्थाओं को दें जिससे कि न केवल वे एन.जी.ओज. की अनावश्यक वृद्धि को टालें बल्कि राजनैतिक दलों और संगठनों को मजबूत करें जो कि समय आने पर एन.जी.ओज. के लिए भी नई प्रतिभाएं देंगी।

पूर्वी और केन्द्रीय यूरोपियन क्रान्तियों के विपरीत, इन दोनों क्रान्तियों में एकीकृत विपक्षी नेतृत्व नहीं था। बल्कि हमने देखा कि क्रान्तियां बिना नेताओं के थी, संगठन के बिना विखंडन था, यद्यपि समय के साथ इसमें सुधार हुआ है। जन संचार के साधनों ने कम महत्व–पूर्ण होते हुए भी लोगों को घटनाक्रम के बारे में सूचित किया, खासतौर पर तब जबकि ट्यूनीशिया और मिस्र के राष्ट्रीय टी.वी. लोगों को पूरी तरह से गुमराह कर रहे थे। 26 जनवरी को मिस्र के टी.वी. पर एक खाना–पकाना कार्यक्रम दिखाया जा रहा था जैसे कि अन्यत्र कहीं कुछ हुआ ही नहीं हो। जबकि दूसरे चैनल जैसे कि अल–जज़ीरा, बीबीसी अरेबिक और फ्रांस 24 सूचनाओं और विश्लेषण के साथ प्रदर्शकों द्वारा भेजी गई तस्वीरों का प्रसारण कर रहे थे। मुझे जोर देकर कहना चाहिये कि अल–जज़ीरा ने अरब के आंतरिक मामलों में अरबी जनता की शिकायतों के "गैर हस्तक्षेप के सिद्धांत" को बदल कर "एकता" के साथ देखा।

> आगे क्या?

अंत में हम केवल यही आशा कर सकते हैं कि यह अद्‌भुत विद्रोह लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभिक बिन्दु बने–एक प्रक्रिया जो कि बारुदी सुरंगों से भरी है। बाकी जो भी हो, जनता को अब यह विश्वास दिलाना मुश्किल है कि उन्हे तानाशाही के स्थायित्व एवं सुरक्षा और इस्लामिक उग्रवाद के खतरे के बीच में से एक को चुनना है। माओत्सेतुंग का आदर्श वाक्य उचित ही है : "स्वर्ग में बड़ी अराजकता है–परिस्थिति बहुत अच्छी है।" निकट भविष्य में हमें बहुत ही मुश्किल क्षणों और सेना से लम्बी बातचीत की उम्मीद करनी चाहिये जिसने कि ट्यूनीशिया और मिस्र दोनों में सत्ता पर अधिकार कर लिया है।■

> इतिहास का एक कोना

जैनीफर प्लॉट, उपाध्यक्ष, प्रकाशन, आई.एस.ए.

मैक्सिको नगर में 21 से 25 मार्च के मध्य कार्यकारिणी की वार्षिक बैठक के अतिरिक्त मैक्सिको के साथियों के साथ एक सेमीनार का भी चूंकि आयोजन है अतः यह एक उपयुक्त क्षण है कि मैक्सिको में आई.एस.ए. के इतिहास की चर्चा की जाए। 1990 के दशक तक आई.एस.ए. के सदस्यों की कुल संख्या का केवल चार प्रतिशत लेटिन अमेरिका से सम्बद्ध था। परन्तु रिसर्च कमेटी एवं कार्यकारिणी सदस्यों में उनकी संख्या अपेक्षाकृत अधिक थी अतः लेटिन अमेरिकन प्रतिनिधित्व इन कमेटियों में प्रभावी रहा। जिनो जरमानी (1962–6 की अवधि में उपाध्यक्ष) जो कि अर्जेन्टीना से सम्बद्ध है और फरनान्डो कार्डोसा (1982–6 की अवधि में अध्यक्ष) जो कि ब्राजील से सम्बद्ध है, की इस संदर्भ में विशेष चर्चा की जा सकती है। कार्यकारिणी में मैक्सिको नगर से सम्बद्ध पहले सदस्य फ्रान्सिस्को जपाटा थे, जो कि चिली से राजनैतिक निष्कासित थे। उन्हें 1978–82 की अवधि में सदस्यता मिली। उन्हें ऐलेन तोरेन ने नामित किया था जो कि पेरिस में फ्रान्सिको जपाटा के साथ पढ़े थे। इनके उपरान्त 1994–8 में जार्ज गोन्जालेज कार्यकारिणी के सदस्य बने।

1982 में तृतीय विश्व के किसी भी देश में पहली बार विश्व कांग्रेस मैक्सिको नगर में सम्पन्न हुई जो एक महत्त्वपूर्ण प्रघटना थी। आई.एस.ए. अध्यक्ष उल्फ हिमलस्ट्रान्ड के कार्यकाल में सम्पन्न हुई इस विश्व कांग्रेस का मुख्य विषय 'समाजशास्त्रीय सिद्धान्त एवं सामाजिक व्यावहारिकता' था। इस कांग्रेस की स्थानीय तैयारी समिति के अध्यक्ष यूनिवर्सिडाड नैसियोनाल आटोनोमा डि मैक्सिको के गैरार्डो एस्ट्राडा थे। इस विश्व कांग्रेस में सहभागियों की संख्या अप्रत्याशित रूप से इतनी अधिक थी कि अनेक गतिविधियों के प्रकाशन के लिए आपातकालीन प्रबन्ध करने पड़े। सम्भवतया यह भी एक महत्त्वपूर्ण तथ्य था कि कुछ प्रभावशाली सहभागी ऐसे भी थे, जो शायद पंजीकृत प्रतिनिधि नहीं थे, पर उन्होंने कांग्रेस में भाग लिया था।

बैठकों के स्वरूप एवं उनकी अन्तर्वस्तु को लेकर स्थानीय विद्यार्थियों ने अनेक महत्त्वपूर्ण आपत्तियाँ की। कार्यक्रमों में ऐसे आलेखों की संख्या कम थी जो मैक्सिकों की उन समस्याओं से सम्बद्ध थे जो कांग्रेस के समय महत्त्वपूर्ण थीं। डॉलर की तुलना में मुद्रा का अवमूल्यन एवं बैकों के राष्ट्रीयकरण से सम्बद्ध मुद्दे उसका उदाहरण थे, जो अनेक समस्याओं को जन्म दे चुके थे। अनेक सहभागियों की दृष्टि में चूँकि मैक्सिकन समाजशास्त्र अकादमिक गतिविधियों के साथ–साथ राजनीतिक गति–विधियों के प्रति भी समान रूप से अभिमुखित था अतः महत्त्वपूर्ण समस्याओं से जुड़े मुद्दों पर चर्चा न किये जाने की तीखी आलोचना हुई। सांगठनिक गतिविधियों में सुधार कर, निर्धारित बैठकों के अतिरिक्त अनेक बैठकों का तत्काल आयोजन कर सहभागियों की माँगों को एक सीमा तक स्वीकार किया गया। उन्हीं सभागारों में अतिरिक्त बैठकों का आयोजन कर तथा उनमें मैक्सिकन सहभागियों द्वारा स्थानीय मुद्दों पर विचार कर इस आलोचना को न्यूनतम किया गया। अंग्रेजी भाषा में सभी बैठकों के आयोजन की भी तीखी आलोचना की गयी। उद्‌घाटन सत्र के दौरान एक विशाल प्रदर्शन हुआ जिसमें शोध प्रपत्रों के स्पैनिश भाषा में (जो उस समय आई.एस.ए. की आधिकारिक भाषा नहीं थी) अनुवाद की माँग की गयी। 'सरवान्टे यस, शैक्सपीयर नो' के नारे का एक बैनर प्रस्तुत किया गया। उद्‌घाटन सत्र के अलावा अन्य सत्रों में भी इस माँग को लेकर व्यवधान डाले गये। उस समय (और वर्तमान में भी) आई.एस.ए. का वित्तीय विभाग उद्‌घाटन सत्र के अतिरिक्त अन्य सत्रों के शोध प्रपत्रों/व्याख्यानों के साथ–साथ अन्य भाषाओं में अनुवाद की प्रणाली को नहीं स्वीकारता। परन्तु कुछ सत्रों के शोध प्रपत्रों के विद्यार्थियों के हितों में अनुवाद करवाये गये (कांग्रेस की गतिविधियों के बाद में प्रस्तुत प्रतिवेदन में आरटूर मेयर का यह विचार था कि ये प्रदर्शन भाषायी संघर्ष की अभिव्यक्ति नहीं थे, ये तो साम्राज्यवाद के रूप में उभरे अमेरिकन प्रभुत्त्व के विरूद्ध राष्ट्रीय सांस्कृतिक अस्मिता की प्रस्तुति थे)। मैड्रिड में 1990 में सम्पन्न हुई विश्व कांग्रेस में भी ऐसे विरोध प्रदर्शन हुए और अन्ततः आई.एस.ए. ने स्पैनिश भाषा को आधिकारिक भाषा की स्वीकृति प्रदान की।

> जापानी समाजशास्त्रियों के साथ एकजुटता

अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र समिति (आई.एस.ए.) की कार्यकारिणी जापान में हाल में आये भूकम्प, सुनामी एवं आणविक दुर्घटना की त्रासदियों के शिकार जापानी नागरिकों के प्रति अपनी संवेदना एवं एकजुटता को व्यक्त करती है। हम यह जानते हैं कि जापानी नागरिक अपने साहस, एकता एवं सामूहिकता के भाव के साथ इस अप्रत्याशित त्रासदी का सामना करने में सक्षम हैं। हम जापानी समाजशास्त्रियों के साथ प्रत्येक स्तर पर प्रतिबद्धता को दोहराते हैं एवं सन् 2014 में योकोहामा में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र समिति के द्वारा आयोजित विश्व कंग्रेस की सफलता के प्रति आशावान हैं। हमें ज्ञात है कि यह जापानी समाजशास्त्र के शताब्दी वर्ष का दौर है। हम इस तथ्य की सराहना करते हैं कि चिन्ता एवं तनाव के इन क्षणों में जापानी समाजशास्त्र समिति (जेएसएस) के दो सदस्य प्रोफेसर शुजिरो यावाजा, अध्यक्ष जे.एस.एस. एवं प्रोफेसर कोइची हासेगावा, अध्यक्ष स्थानीय आयोजन समिति ने मैक्सिको नगर में कार्यकारिणी की बैठक में सहभागिता की। प्रोफेसर हासेगावा ने कार्यकारिणी के सम्मुख जिस प्रतिवेदन को प्रस्तुत किया उसे हम पूर्णरूपेण यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं :

आपदा निरोधक केन्द्र
छायाचित्र कोइची हासेगावा

सुनामी ने उत्तरपूर्वी जापान की सुन्दर एवं गहराई तक बनी हुई तटीय सीमा के साथ–साथ प्रत्येक मत्स्य शिकार केन्द्र को न केवल समाप्त किया अपितु लकड़ी की बनी समस्त इमारतों को भी तबाह कर दिया। इन स्थानों पर केवल स्टील के ढाँचे ही बचे। यह चित्र मिनामी संरिकु शहर की तबाही का है। यह दिखाता है कि आपदा निरोधक केन्द्र की तीन मंजलीय इमारत का ढाँचा कैसा था। 11 मार्च को इस केन्द्र में तीस से अधिक अधिकारी कार्य कर रहे थे। नगर के मेयर (अध्यक्ष) सहित आठ अधिकारी चमत्कारिक रूप से इस ढाँचे की सबसे ऊपर की छत से बचा लिये गये। अन्य लोगों की मृत्यु हो गई जिनमें एक ऐसी युवा महिला भी सम्मिलित थी जिसका कार्य सामुदायिक वायरलैस प्रणाली पर लोगों को स्थान खाली करने की चेतावनी एवं सम्बन्धित निर्देशों को प्रसारित करना था। इस महिला की आवाज ने अनेक लोगों को बचा लिया पर वह खुद सुनामी के बहाव का शिकार हो गई। इस छायाचित्र में विद्युत प्रवाहित करने के उन खंभों एवं मशीनों को दर्शाया गया है जो जापान के पुर्ननिर्माण की प्रतिबद्धता, आशा एवं इस पुर्ननिर्माण के प्रति कार्य करने की तत्परता को व्यक्त करता है।

> योकोहामा– आशाओं का द्वीप

कोइची हासेगावा, तोहोकू विश्वविद्यालय, सेन्डइ तथा योकोहामा में सन् 2014 में आयोजित होने वाली विश्व समाजशास्त्र कांग्रेस की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष का वक्तव्य

उत्तर–पूर्वी जापान के तटीय क्षेत्रों को 11 मार्च की अपरान्ह विनाशकारी भूकम्प एवं सुनामी का सामना करना पड़ा। सेन्डई नगर जहाँ मैं निवास करता हूँ इस विनाश से सर्वाधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है। मैं और मेरे परिवारजन भाग्यशाली हैं, जो बच गये। जिस समय भूकम्प आया मैं आई.एस.ए. द्वारा आयोजित होने वाली समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस की बजट योजना पर कार्य कर रहा था। एक शान्तिपूर्ण शुक्रवार का अपरान्ह अचानक विनाश में बदल गया। कभी अनुभव न किये गये तीव्र झटकों के क्रम ने मुझे, मेरे परिवार एवं समूचे क्षेत्र को बुरी तरह प्रभावित कर दिया। लगभग सारी पुस्तकें एवं कागजात कमरे के फर्श पर जा गिरे और अगले ही पल मैं उन किताबों/पुस्तकों एवं कागजातों के बीच में था जो एक मीटर की ऊँचाई तक उछल रहे थे। दो सप्ताह बीत जाने के बावजूद आज भी मुझे विश्वास नहीं होता कि ऐसा हादसा हुआ है। मुझे यह महसूस होता है जैसे कि मैं किसी वास्तविक जीवन का भाग न होकर सिनेमा का एक भाग था।

सैन फ्रांसिस्को एवं लास एंजिलस की तरह जापान में अनेक भूकम्प आते रहते हैं। जापान चार टैक्टोनिक प्लेट की सीमा पर स्थित है। इस कारण एक सीमा तक भूकम्पों ने सदैव जापानी समाज के इतिहास को प्रभावित किया है, जापानी नागरिकों को इस कारण सदैव भूकम्प आने की आशंका रहती है और वे सदैव भूकम्प की इस त्रासदी का सामना करने को तैयार रहते हैं। लेकिन इतनी तीव्रता एवं लगातार भूकम्प के झटकों की किसी ने कल्पना भी नहीं की थी जो पाँच मिनट के अन्दर आये। रैक्टर स्केल पर 9 से अधिक की तीव्रता से आये इस भयानक भूकम्प के कारण सुनामी की अप्रत्याशित रूप से उठी ऊँची लहरों ने जो जन धन की हानि की वह हम सबकी कल्पना के परे था।

भूकम्पों की संख्या एवं उसकी गहनता को देखते हुए जापान जो कि इस दृष्टि से विश्व में चौथा है और जहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक है, जन धन की हानि सापेक्षिक रूप से कम हुई है। यहाँ का समुदाय भूकम्प निरोधी इमारतों में निवास के कारण पूर्णतया तैयार था। विद्यालय एवं विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों को भूकम्प एवं सुनामी से बचाव का नियमित रूप से प्रशिक्षण दिया जाता है।

मैं बहुत गर्व के साथ यह कह सकता हूँ कि इस त्रासदी के कारण किसी प्रकार का कोई दंगा या कोई लूटपाट जापान के किसी भी भाग में नहीं हुई। टोक्यो जैसे महानगर में एवं उन क्षेत्रों में जहाँ सर्वाधिक जनधन की हानि हुई या जहाँ भूकम्प ने सबसे घातक प्रभाव डाले, में नागरिकों ने शांतिपूर्ण व्यवहार किया तथा भोजन, पानी एवं यातायात सुविधाओं को प्राप्त करने के लिये अनुशासित व्यवहार किया तथा पंक्तियों में लगकर इन सुविधाओं को प्राप्त किया। इस भयानक त्रासदी के बावजूद जापानी नागरिकों ने जिस अनुशासन का परिचय दिया और जो जापानी संस्कृति की विशेषता भी है ने, अनेक विदेशी पत्रकारों को प्रभावित किया।

लगभग दस हजार लोगों के मारे जाने की आधिकारिक सूचना है। ये मौतें मुख्यतः तटीय क्षेत्रों में हुई हैं। दो सप्ताह के उपरान्त यह सूचना भी है कि लगभग सोलह हजार से अधिक लोग लापता हैं। यह भूकम्प एवं सुनामी आधुनिक जापान के इतिहास में सर्वाधिक हानि उत्पन्न करने वाली प्राकृतिक आपदा है। जापान की ऊर्जा नीति में परिवर्तन के लिये क्या चेरनोबिल जैसी आणविक दुर्घटना की आवश्यकता है ?

हम में से अनेक लोग फुकुशिमा में स्थित आणविक केन्द्र को लेकर बहुत चिन्तित हैं। एक पर्यावरणीय समाजशास्त्री एवं सामाजिक आन्दोलन के विशेषज्ञ के रूप में मैंने आणविक ऊर्जा को विकसित करने वाली जापान की ऊर्जा नीति का पूरी तरह से विरोध किया था और 1996 में एक पुस्तक जो कि 'ए चाइस फॉर ए पोस्ट न्यूकलियर सोसायटी' के नाम से प्रकाशित हुई में इस नीति की आलोचना को प्रस्तुत किया। इस पुस्तक में यह तर्क दिया गया था कि आणविक ऊर्जा नीति को जापान सरकार पूरी तरह से निरस्त करे। अनेक सार्वजनिक भाषणों में मैंने यह सवाल उठाया कि क्या हम जापान की ऊर्जा नीति को तभी परिवर्तित करेंगे जब चेरनोबिल जैसी कोई त्रासदी जापान में भी घटित हो जाएगी। यह अत्यन्त दुर्भाग्य जनक है कि पन्द्रह वर्षों के उपरान्त मेरे द्वारा दी गई यह चेतावनी एक वास्तविकता बन गई है। जापान सरकार ने चेरनोबिल आणविक दुर्घटना, थ्री माइल द्वीप दुर्घटना एवं अन्य छोटी मोटी दुर्घटनाओं से किसी भी प्रकार की कोई सीख नहीं ली और इनके संभावित घातक परिणामों की उपेक्षा भी कर दी। मुझे यह कहते हुए खेद है कि इस मुद्दे को लेकर मैं शक्तिहीनता एवं खालीपन की अनुभूति कर रहा हूँ।

> आयोजन स्थल भूकम्प प्रतिरोधी है

मैं यह समझ सकता हूँ कि सन् 2014 की विश्व समाजशास्त्र कांग्रेस जो कि जापान

में हो रही है, में भाग लेने के विषय में आप पुर्नविचार कर रहे होंगे पर मैं आपको यह बता सकता हूँ कि आप वहाँ आकर यह जानना चाहेंगे कि उस समय तक जापान ने अपने आपको कितना पुनर्स्थापित कर लिया है। जापानी समाज का इतिहास विभिन्न विपदाओं से सफलतापूर्वक उबरने का भी इतिहास है। 1923 में कान्टो में आया भूकम्प, 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हवाई हमले जो कि टोक्यो पर हुए एवं हिरोशिमा एवं नागासाकी पर हुआ आणविक हमला तथा हाल ही 1995 में कोबे में आये भूकम्प जैसी त्रासदियों का जापान ने सफलतापूर्वक सामना किया है।

योकोहामा शहर एवं विश्व समाजशास्त्र सम्मेलन का स्थल पेसीफीको योकोहामा को हाल में आये इस भयानक भूकम्प ने अधिक हानि नहीं की है। यह भी मुझे बताया गया है कि योकोहामा में बनाई गई इमारतें बड़े पैमाने पर आने वाले भूकम्प का मुकाबला कर सकती हैं और साथ ही उनकी सुरक्षा की लगातार निगरानी की जा रही है। हमारा सम्मेलन स्थल पूरी तरह से भूकम्प प्रतिरोधी है। साथ ही योकोहामा में कभी भी सुनामी का प्रकोप नहीं हुआ है। 152 साल के इतिहास में योकोहामा में केवल एक बार हल्की सी लहरें उठी थी जिनसे कोई हानि नहीं हुई। योकोहामा नगर का आकार कुछ इस प्रकार का है कि सुनामी की लहरें इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर पाती हैं। योकोहामा एवं यहाँ के नागरिक भूकम्पों का सामना करने में सक्षम हैं।

> जापान की स्थानीय आयोजन समिति अपनी भूमिका का सर्वोच्च निर्वाह करेगी।

जापान की स्थानीय आयोजन समिति एक वृहद् राष्ट्रीय समूह है जिसने जून 2008 में अपना कार्य प्रारम्भ किया था। इसमें जापान के विभिन्न क्षेत्रों के 17 सदस्य सम्मिलित हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान किये हैं। हम सब अपनी क्षमता अनुसार यह प्रयास कर रहे हैं कि आगामी विश्व कंग्रेस अब तक का सबसे व्यवस्थित एवं आकर्षण वाला सम्मेलन हो। अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र समिति की कार्यकारिणी एवं जापान समाजशास्त्र समिति के सहयोग के साथ हम उन अनुभवों एवं चुनौतियों को सीख रहे हैं जो गोथनबर्ग सम्मेलन से सम्बन्धित थे। जहाँ तक आयोजन स्थल PACIFICO योकोहामा का सवाल है, इसके एक हिस्से की तरफ दो इमारतें पास–पास स्थित हैं जिनमें शोध समितियों के लिये 80 कमरे मौजूद हैं। इन कमरों में अन्य

कोइची हासेगावा, जापान में आयोजित होनी वाली योकोहामा विश्व कांग्रेस की स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष

समूह भी अपने कार्यक्रमों को संचालित कर सकते हैं। दो कमरों के बीच आने जाने में 10 मिनट से ज्यादा समय नहीं लगता है।

जापान की स्थानीय आयोजन समिति ने निम्नलिखित 5 मुद्दों (thematic sessions) पर विमर्श की तैयारी की हैः–

- प्राकृतिक / मानवीय त्रासदी एवं स्थानीय समाज द्वारा उससे उबरने की तैयारी
- निम्न प्रजजन, तीव्र गति से बढ़ता वृद्ध समाज एवं लैंगिक सम्बन्धों में परिवर्तन
- नागरिकीय समाज के मुद्दे : नागरिकीय समाज संगठन, गैर सरकारी संगठन, सामाजिक आन्दोलन
- पूर्वी एशियाई संदर्भों के साथ दाबित आधुनिकीकरण एवं वैश्वीकरण
- समाजशास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक अनुसंधान एवं शिक्षा

ये विषय विश्व कांग्रेस के मुख्य विषय 'एक असमान विश्व की उपस्थिति : वैश्विक समाजशास्त्र के लिये चुनौतियाँ' के साथ घनिष्ठ रूप में जुड़े हैं। पूर्वी एशियाई परिप्रेक्ष्य को सम्मिलित करने के लिए हम कोरिया, चीन एवं ताइवान के समाजशास्त्रियों से सहयोग कर रहे हैं।

> योकोहामा को आशाओं का द्वीप बनायें

PACIFICO योकोहामा मिनाटो–मिराई क्षेत्र में स्थित है। जिसे भविष्य का क्षेत्र कहा गया है। इसका अर्थ आशाओं का क्षेत्र भी है। एक बहुत लंबे समय से योकोहामा पूर्वी पश्चिमी क्षेत्रों के मध्य अन्तः क्रियाओं का केन्द्र रहा है। इसके साथ ही पूर्वोत्तर एवं दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के मध्य विनिमय का भी यह केन्द्र रहा है। परिणामस्वरूप एशिया एवं अमेरिका के मध्य के सेतु के रूप में तथा एशिया के उत्तर एवं दक्षिणी हिस्सों को विश्व के साथ जोडने के केन्द्र के रूप में इसकी पहचान बनी है। योकोहामा उन युवाओं के लिए भी आशा का क्षेत्र है जो एशिया को छोडकर विदेश में जाते हैं। ये युवा हवाई यात्रा का एक समय यहाँ व्यतीत करते हैं। अनेक लोग विभिन्न प्रकार के अवसरों की आशा में योकोहामा के रास्ते जापान में प्रवेश करते हैं। वर्तमान में योकोहामा जापान के वैश्विक नगरों में से एक है। इस नगर में विविधता, विभिन्न प्रकार के आकर्षणों से जुड़े भेद एवं गतिशीलता विद्यमान है। इस नगर में निर्वन्शीयता का बाहुल्य है जो कि जापानी समाज की पारम्परिक छवि को चुनौती देता है।

हमारी अनेक चिंताओं में से एक पंजीकृत सहभागियों की संख्या है। हमारा लक्ष्य 5000 से अधिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति से जुडा है। यह संख्या गोथनबर्ग कांग्रेस में सहभागियों की संख्या के आधार पर उद्देश्य का हिस्सा बनी है। मुझे डर है कि भयानक भूकम्प एवं आणविक घटना के कारण निर्मित हुई नकारात्मक छवि से सहभागियों की संख्या कम हो सकती है।

लेकिन मुझे पता है कि आप आर्म चेयर समाजशास्त्री नहीं हैं। आप सभी सामाजिक वास्तविकताओं का सामना करने वाले बहादुर समाजशास्त्री हैं। कृपया अपने सहयोगियों, मित्रों एवं विद्यार्थियों से अनुरोध करें कि वे तीन साल के उपरान्त सन् 2014 में योकोहामा आयें और एक पुर्ननवीनीकृत तथा एकजुटता मूलक जापानी समाज को देखें और उसका अनुभव करें। जापान आने की आपकी प्रतिबद्धता और विश्व कांग्रेस में सहभागिता करने का आपके द्वारा दिया गया विश्वास जापानी समाज एवं जापानी समाजशास्त्र के लिये उत्साहवर्धक बनेगा। कृपया जापान आने का कार्यक्रम सुनिश्चित करें एवं अपनी आंखों से देखें कि जापान के लोग और जापान की संस्कृति कैसी है और जापान ने किस प्रकार अपने आपको पुर्नस्थापित किया। आइये हम सब मिलकर योकोहामा को एक बार फिर आशाओं का एक ऐसा द्वीप बनायें जहां सभी बहादुर समाजशास्त्री एक साथ सक्रिय होकर असमान विश्व से सम्बन्धित चुनौतियों का मुकाबला करें, अनेक विकल्पों की चर्चा करें और उस भविष्य की रूपरेखा बनाये जो दीर्घकालिक एवं दूरगामी हो। योकोहामा कांग्रेस आपकी अपनी कांग्रेस है। आपने जो समर्थन दिया है उसके लिये धन्यवाद।

> विविध ज्ञान–धाराओं के साथ अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र

सुजाता पटेल, हैदराबाद विश्वविद्यालय, भारत

वैश्विक संवाद (ग्लोबल डायलाग) ने अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र से सम्बन्धित एक रूचिकर बहस को प्रारम्भ किया है। मेरा हस्तक्षेप इस लेख में उलरिख बैक के महानगरीय मोड़ (Cosmopolitan turn) से सम्बन्धित उन दो योगदानों से है जो वैश्विक संवाद 1:3 में प्रकाशित हुए हैं। इसके साथ ही इस विषय से सम्बन्धित रेविन कॉनेल (ग्लोबल डायलाग : 1:2) के विचारों को भी मैंने परखने का प्रयास किया है। मेरा यह लेख तीन महत्वपूर्ण विचारों : पद्धतिशास्त्रीय, महानगरीयतावाद, पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद एवं वैश्विक समाजशास्त्र पर केन्द्रित है।

क्रेग कॅलहन के विचार में महानगरीयतावाद की अवधारणा आज अत्यधिक प्रचलन में है। इसके विभिन्न अर्थों एवं आन्तरिक जटिलताओं की व्याख्या न कर मैं महानगरीयतावाद की सामान्य समझ को प्रयुक्त कर रही हूँ। विभिन्न स्वरूपों में उपस्थित ''अन्य की'' अवधारणा को मान्यता महानगरीयतावाद का एक सामान्य अर्थ है। पत्रिका ''पब्लिक कल्चर'' के सन् 2000 के संपादकीय में क्रेग कॅलहन का मत है कि महानगरीयतावाद अपने वृहद एवं जटिलताओं भरे क्षेत्र में उन पक्षों को सम्मिलित करता है जो पारस्परिकता की स्थिति में पारस्परिकता मूलक विचार को हमारी चेतना और हमारी आवश्यकताओं से सम्बन्धित कर देते हैं। निश्चित रूप से जब हम पारस्परिकता एवं विभेद को मान्यता प्रदान कर देते हैं तब ''परस्पर विरोधी परिप्रेक्ष्य (उत्तर एवं दक्षिण) व्यवस्थित रूप से जन्म लेता है। इस परिप्रेक्ष्य के समन्वित रूप को उलरिख बैक ने समाजशास्त्रीय विश्लेषण में प्रयुक्त किया है।

मेरा सवाल यह है कि बैक का पद्धतिशास्त्रीय महानगरीयतावाद समाजशास्त्रीय अध्ययनों के क्षेत्र में उन महत्वपूर्ण अनुभवों की उपेक्षा क्यों कर देता है जो कि दक्षिण के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान है? कॉनेल ने अपनी पुस्तक ''Southern Theory'' में इस पक्ष की न केवल विवेचना की है अपितु वैश्विक दक्षिण के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा इस मत की व्याख्या की गई है। उनके विचारों में निर्मित तर्क अकादमिक निर्भरता की अवधारणा को जन्म देते हैं जिसकी अभिव्यक्ति अध्यापन, शिक्षण प्रक्रिया, पाठ्यक्रम, अनुसंधान प्रक्रिया, शोध पत्रिकाओं एवं पुस्तकों में प्रकाशित लेखों की मान्यता इत्यादि में होती है और अंततः यह समझने का प्रयास किया जाता है कि कौन कहाँ प्रकाशित हुआ है और इस प्रकाशन से अकादमिक दक्षता क्या है? को सुनिश्चित किया जाता है।

इस अकादमिक निर्भरता की निरंतर उपस्थिति के क्या कारण हैं? इसके अनेक उत्तर दिये जा सकते हैं। इस निर्भरता का प्रारम्भ उपनिवेशवाद एवं ज्ञान के स्वरूपों के मध्य संबंध से होता है। इसकी उपस्थिति को ''बन्धक मस्तिष्क'' (captive mind) प्रारूप के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रारूप का उल्लेख सईद हुसैन अलातास ने किया है। उपनिवेशवाद की औपचारिक समाप्ति के बावजूद समाज वैज्ञानिक आधुनिकता से सम्बन्धित सिद्धान्तों की विवेचना में संलग्न रहते हैं परिणामस्वरूप समाजशास्त्र में बन्धक मस्तिष्क की उपस्थिति देखी जा सकती है। विचारकों का यह मत है कि यूरोपीय एवं उत्तर अमेरिकन समाजशास्त्रीय सिद्धान्त स्वसंस्कृति केन्द्रित (ethno-centric) तथा इनके यूरोप केन्द्रित (euro centric) दृष्टिकोण उस समावेशी विषय के विकास में बाधक बन जाते हैं जिसे महानगरीयतावाद की संज्ञा दी जा सकती है।

एक यूरोप केन्द्रित कल्पना स्वयं को कुछ स्वनिर्मित छवियों के आधार पर समझती है। यह स्वनिर्मित छवि अपने विकास को यूरोपीय नवजागरण के अन्तर्गत व्यक्त करती है जिसमें नवीन तार्किक एवं मानवीय पक्ष महत्वपूर्ण रूप से उभार लेते हैं। तर्क एवं विज्ञान के साथ इन पक्षों ने समय एवं स्थान पर विजय प्राप्त की। परिणामस्वरूप मानव प्रगति की आकांक्षा की प्राप्ति सुनिश्चित हो सकी। आरिफ डिर्लिक ने यूरोप के अन्दर एक 'सांस्कृतिक' प्रक्रिया की उपस्थिति का तर्क दिया है। इस तर्क में यूरोप केन्द्रित कल्पना कुछ साधनों को समाहित करती है। आधुनिकता को एक विश्व आर्थिक व्यवस्था (बाजार के साथ पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था) के रूप में प्रत्यक्षीकृत करने के बजाय उसे राजनीतिक रचना की सततता (राष्ट्र राज्य की व्यवस्था जिसमें कानून की वैधता से उभरा राष्ट्र स्वरूप सम्मिलित है), एक सामाजिक संगठन (वर्ग, लिंग, प्रजाति, नृवंशीयता के स्वरूप) एवं सांस्कृतिक व्यवहार (अवकाश, अच्छा जीवन) से सम्बद्ध किया जाता है। इसमें यूरोप केन्द्रित कल्पना की रचना उभरती है। इस प्रकार का 'स्व' न केवल देशज विकास के संदर्भ में उभरा अपितु यह उभार औपनिवेशिक एवं साम्राज्यवादी प्रभुत्व प्रक्रियाओं से बने संगठनों से भी अत्यन्त प्रभावित हुआ। यूरोपीय विचारकों ने इस विमर्श का मूल्यांकन उपनिवेशवाद के साथ पारस्परिकता मूलक सम्बन्धों के संदर्भ के साथ नहीं किया। आज भी इस मूल्यांकन की निरन्तरता है। यूरोपीय विचारकों का यह मूल्यांकन देशज इतिहास एवं भाषा पर आधारित है। आज भी इस उपागम की निरन्तरता है जिसके द्वारा उच्च, आमूलचूल परिवर्तनकारी या द्वितीय आधुनिकता की व्याख्या यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के अन्दर होती है। इस विवेचना से पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद की व्याख्या की स्थिति उभरती है।

> पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद

पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद के सिद्धान्त की आलोचना से सम्बद्ध दो अवधारणायें हैं जो 'क्षेत्र' एवं 'स्थान' से सम्बन्धित हैं। सिद्धान्तकारों ने विश्लेषण की दृष्टि से इन्हें पृथक करने के प्रयास किये हैं लेकिन इन अवधारणाओं के प्रयोग में अनेक निकटतायें झलकती हैं। सामान्यतः क्षेत्र (स्पेस) को सामाजिक अन्तःसम्बन्ध की व्याख्या से सम्बन्धित अमूर्त विमर्श के साथ जोड़ा जाता है जबकि स्थान (प्लेस) का अभिप्राय उस भौगोलिक जगह से है जहाँ ये अन्तःसम्बन्ध सक्रिय होते हैं। स्थान को सामाजिक सम्बन्धों के मिश्रित रूप की दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। अनेक बार ये स्थान बिखर जाते हैं एवं चेतना के रूप मं पहचाने जाते हैं अथवा सम्बन्धित प्रतीकात्मक अर्थ से जाने जाते हैं (जैसे नगर की दृष्टि में ब्यूनस आयर्स अथवा राष्ट्र–राज्य के रूप में दक्षिण अफ्रीका)। ये अस्मिताएं एकजुटता को पनपाती हैं जो अन्य स्थानों/सीमाओं के विरुद्ध सक्रिय होती हैं, जैसे राष्ट्रीय (मलेशिया के विरुद्ध सिंगापुर) एवं सुपर राष्ट्रीय (हालैण्ड के विरुद्ध इण्डोनेशिया)। अनेक बार 'स्थानीय' जगह के सम्बन्ध एवं एकजुटता के अवयव प्रयुक्त होते हैं (तहरीर स्क्वायर)।

पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद क्षेत्र एवं स्थान के मध्य की सम्बद्धता की जटिलता को उस समय भ्रामक बना देता है जब यह तर्क दिया जाता है कि राष्ट्र, राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रवाद की अवधारणाएं समाजविज्ञानों की रचना में नकारात्मकता का भाव उत्पन्न करती हैं (सिद्धान्तों के निर्माण एवं पद्धतिशास्त्र तथा पद्धति के क्रियान्वयन की दृष्टि से)। ऐसा सम्भवतः इसलिए हुआ क्योंकि जर्मनी एवं फ्रांस जैसे औपनिवेशवादी–साम्राज्यवादी देशों में समाज शास्त्र के क्लासकीय समाजशास्त्रियों ने जो कुछ विषय केन्द्रित विवचेनाएं कीं उन्हें समूचे विश्व ने स्वीकार नहीं किया। भारत जैसे देश जो उपनिवेशवाद का शिकार रह चुके हैं, में राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद के विमर्श को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया। भारत में समाजशास्त्र विषय के इतिहास का परीक्षण हमें इन जटिलताओं को समझने में सहायता करता है।

भारत में जब समाज विज्ञान विकसित हुए तो भारतीय समाज को गैर आधुनिक समाज के रूप में मानवशास्त्रीय सिद्धान्तों, पद्धति शास्त्र एवं पद्धति के आधार पर प्रस्तुत किया गया जो कि सिद्धान्तों एवं पद्धतिशास्त्र तथा पद्धति का औपनिवेशिक प्रयोग था। इस विमर्श पर राष्ट्रवादी अवधारणाओं के आधार पर सवाल उठाये गये। राष्ट्रीय विचारधाराएं जो कि स्वाधीनता के पूर्व एवं पश्चात् भारत में उभरी ने हमें प्राप्त हुई औपनिवेशिक ज्ञान संरचना को चुनौती देने को प्रेरित किया। औपनिवेशिक ज्ञान भारतीय समाज का 'बाहर' (आउटसाइड) से मूल्यांकन था जबकि इसके 'अन्दर' (इनसाइड) से विश्लेषण/मूल्यांकन की आवश्यकता थी। इस 'अन्दर' के विश्लेषण ने यूरोपीय समाजशास्त्र में विकसित हुए सिद्धान्तों से बहस करने हेतु समाजशास्त्रीय भाषा को जन्म दिया। राष्ट्रीय आधुनिकता के विचार के प्रारम्भ ने उच्च शिक्षा को गतिशीलता के अवसर प्रदान करने की दृष्टि से विवेचित किया साथ ही राष्ट्रीयता से अभिमुखित समाज विज्ञानों ने नियोजित सामाजिक परिवर्तन एवं विकास की अवधारणाओं की रचना में आलोचनात्मक भूमिका का निर्वहन किया।

"...बैक का पद्धतिशास्त्रीय महानगरीयतावाद समाजशास्त्रीय अध्ययनों के क्षेत्र में उन महत्वपूर्ण अनुभवों की उपेक्षा क्यों कर देता है जो कि दक्षिण के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान है ?..."

अतः औपनिवेशिक सत्ता का शिकार रहे अन्य देशों की तरह भारत में पद्धतिशास्त्र राष्ट्रवाद एक स्वचेतना से उभरा स्थान/सीमा बना जिसने समाजविज्ञानों में औपनिवेशिक विमर्श पर प्रहार किये। 'स्थान' को रेखांकित एवं स्वीकृत कर 'राष्ट्रीय' बुद्धिजीवियों ने प्रभावशाली ओपनिवेशिक ज्ञान के विरुद्ध बौद्धिक एकजुटता को उत्पन्न किया। दूसरे इस स्थान केन्द्रित एकजुटता की स्वीकृति अथवा मान्यता ने 'वैकल्पिक' विमर्श को उभरने में सहायता दी। नीतियों एवं कार्यप्रणालियों की रचनाओं के माध्यम से ज्ञान व्यवस्था के सांस्थीकरण को इस आधार पर एक सिद्धान्त के रूप में देखा जाने लगा। इन नीतियों ने उन प्रणालियों एवं व्यवहारों को निर्मित किया जो अध्यापक एवं शिक्षण प्रक्रिया, शोध केन्द्रों में शोध अध्ययन, अनुसंधान हेतु आर्थिक सहायता के वितरण, प्रत्यावर्तन की भाषा, विभिन्न पेशों के संगठन एवं विशेषज्ञ तथा विशेषज्ञता मूलक बौद्धिक कुशलता को निर्धारित करती हैं।

इस क्रम, जो उपरोक्त विमर्श में उभरा है, को समझना है क्योंकि पद्धतिशास्त्रीय राष्ट्रवाद से सम्बन्धित बहस में ऐसी नकारात्मकता के अन्तर्विरोधों को केन्द्रीय महत्व दिये जाने की आवश्यकता है। औपनिवेशिक सत्ता से पूर्व में निर्देशित रहे देशों के राष्ट्रीय समाजशास्त्रों ने अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र की समझ को सीमित करने की बजाय व्यापक किया है। एक तरफ इस समझ ने अन्तर्वस्तु की प्रक्रियाओं के परीक्षण के वैकल्पिक तरीकों को उभारा ताकि विश्व में उभरी अनेक उन विशिष्टताओं को समझा जा सके जो विश्व को निर्मित करती हैं वहीं दूसरी ओर उन असमनताओं को रेखांकित किया जा सके जो कि अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र की संरचना को निर्मित करते हैं। इस बौद्धिक विरासत की आज भी उपादेयता है इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इसका यह भी अभिप्राय नहीं है कि स्थान/सीमा की अव–धारणाओं के अन्तर्गत 'समाज' की विवेचना को सीमित करने (राष्ट्र–राज्य इसी तरह समाज की व्याख्या करते हैं) से, जो कि पूर्व–औपनिवेशिक देशों में राष्ट्रीय समाजशास्त्र में महत्व रखते हैं, पद्धतिशास्त्रीय विवाद या समस्याएं नहीं उभरी। यह स्पष्ट है कि इन राष्ट्रीय समाजशास्त्रों में 'स्थानीय', 'निर्बल' एवं 'हाशिये' पर स्थापित निम्न वर्गों की 'स्थान' केन्द्रित आवाजों एवं अनुभवों को अदृश्य किया गया है अथवा उनको अधिक महत्व नहीं दिया गया है। 20वीं शताब्दी के अन्त के समाजशास्त्र यदि एक तरफ 'सुपरा (अधि) राष्ट्रीय' के विचार पर सवाल उठाते हैं तो वहीं अपनी उभरी आधारभूतीय स्थानीयताओं (इन्फ्रा लोकल) द्वारा निर्देशित होते हैं और उन्हें सार्वभौमिक बनाते हैं। वर्तमान में उभरा मुख्य प्रश्न यह है कि एक अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र की रचना करने हेतु ऐसी किन वैचारिक एवं पद्धतिशास्त्रीय प्रणालियों की आवश्यकता है जो उन अन्तः संघर्षात्मक एवं अन्तर्विरोधी प्रक्रियाओं को सम्मिलित करे जिनमें प्रभुत्व–अधीनस्थता का प्रारूप केन्द्रीय स्थान ले। इस प्रभुत्व–अधीनस्थता प्रारूप ने विभेदीकृत केन्द्रों को जहाँ एक तरफ सक्रिय किया है वहां दूसरी ओर विश्व में अनेक अन्यों को शान्त किया है।

> वैश्विक समाजशास्त्र?

मैं बैक से सहमत हूँ जब वे यह सवाल उठाते हैं कि 'सामाजिक एवं राजनीतिक सिद्धान्तों को किस प्रकार सैद्धान्तिक, आनुभविक, पद्धतिशास्त्रीय एवं आदर्शात्मक रूप से उभारा जाय कि वे उन ऐतिहासिक रूप से नवीन, व्यापक परन्तु जटिल एवं भ्रामक आधुनिकताओं को समझा सकें जिन्होंने अपने आधारों को चुनौती प्रस्तुत की है? हम यह बहस कर सकते हैं कि क्या ये 'जटिल या भ्रामक आधुनिकताएं' अन्तः सम्बन्धित विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के परीक्षण हेतु उपयुक्त श्रेणियों के रूप में स्वीकारी जायें। विश्व पूंजीवादी व्यवस्था 15वीं शताब्दी से आज तक असमान एवं जटिल प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करती है पर इतना स्पष्ट है कि हमें कुछ पक्षों को व्यापकता से एक तरफ जहाँ समझना है वहीं दूसरी ओर उन पक्षों से हमें अलग होना है। ये पक्ष उस विमर्श का हिस्सा हैं जो 18वीं शताब्दी से उभरे हैं जैसे सार्वभौमिक (यूरोप–केन्द्रित) बनाम् विशिष्ट (पूर्व औपनिवेशिक एवं राष्ट्रीय)। साथ ही हमें यह सुनिश्चित करना है कि जब हम इन विभाजनों का परीक्षण करें तो उस सार्वभौमिक केन्द्र को महत्व न दें जो एक बार फिर हमें बन्धक मस्तिष्क (captive mind) का भाग बना दें अर्थात् हम उनके अर्थ एवं उनकी भाषा का अनुकरण करते रहें।

दुर्भाग्यजनक रूप से महानगर/महानगरीयतावाद एवं वैश्विक (कास्मापोलिटन/कास्मापालिटनिज्म/ग्लोबल) जैसे शब्दों का यूरोपीय आधुनिकताओं में एक लम्बा इतिहास है। परिणामस्वरूप इतिहास के विभिन्न पक्षों एवं उनके भिन्न भिन्न अर्थों के कारण ये शब्द आज भी अर्थ/अर्थों की दृष्टि से भारी भरकम लगते हैं। मैं इन शब्दों के स्थान पर विविधता (डायवर्सिटीज) को प्राथमिकता दूंगी क्योंकि विभिन्न भाषाओं में, अंग्रेजी सहित, विविधता का शब्द बहुस्तरीय प्रकृति का है। साधारण प्रकृति के भेद से लेकर विभेद के अर्थयुक्त सिद्धान्त को, जिसमें केन्द्र को निर्मित करने में शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारा जाता है, यह शब्द समाहित करता है। प्रतीकात्मक रूप में विविधता का शब्द समरूपीयकरण के स्थान पर बिखराव (अलग अलग) को भी समाहित कर लेता है। तत्व मीमांसायी सिद्धान्त में निहित प्रभाव को यदि महत्वपूर्ण मानें तो विविधता उन केन्द्रों को भी सम्मिलित कर लेती है जो एक क्रम में नहीं रखे जा सकते और न ही वे समान हैं। इन सबके मध्य पारस्परिक प्रभाव मूलक सम्बन्ध होते हैं और पारस्परिकता की ये स्थितियाँ क्षेत्र/स्थान के विभिन्न स्तरों से निर्मित होती हैं और साथ ही शक्ति की संरचना के अन्तर्गत गत्यात्मक होती जाती हैं। व्यक्तिगत रूप में ये स्थितियाँ न तो श्रेष्ठ हैं और न ही निम्न होती हैं। सामूहिक रूप में ये विशिष्ट एवं अनेक हैं, सार्वभौमिक भी हैं पर साथ ही अन्तः सम्बन्धित हैं। ये विभिन्न स्तर स्वयं की विशिष्टताओं एवं समाजशास्त्र के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों (समाजशास्त्रों) को प्रस्तुत एवं परिभाषित करते हैं एवं अन्य सिद्धान्तों तथा परिप्रेक्ष्यों को समझने में सहायक होते हैं।

आज की चुनौती यह है कि उस भाषा एवं बौद्धिक आधार रचना को निर्मित किया जाय जो शक्ति के मापकों/संकेतकों को स्वीकार कर सके ताकि समाजशास्त्रीय परम्पराओं की विभिन्न आवाजों को विकसित करें व उन्हें मजबूती दी जा सके। ■

> असमानता से मुकाबला: मैक्सिको नगर में एक अंतर्राष्ट्रीय परिचर्चा

रॉकेल सोसा एलीजागा, युनिर्वसिडाड नेसियोनाल आटोनोमा ड मैक्सिको, उपाध्यक्ष, कार्यक्रम, आई.एस.ए.

गोरान थेरबोर्न, सदस्य कार्यक्रम समिति, UNAM में असमानता पर सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

21 से 25 मार्च, 2011 तक मैक्सिको नगर में अन्तर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र समिति (International Sociological Association) की कार्यकारिणी की बैठक के साथ–साथ नेशनल आटोनोमस यूनिर्वसिटी के राजनैतिक व सामाजिक विज्ञान संकाय ने मैक्सिको नगर में कुछ प्रसिद्ध मैक्सिकन, लेटिन अमेरिकन और प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय साथियों को असमानता पर बहस के लिए एकत्रित किया। तीन भाषणों में आईएसए के अध्यक्ष माईकल बुरावे (Michael Burawoy), रोलाण्डो कोरडेरा (Rolando Cordera) तथा गोरान थेरबोर्न (Goran Therborn) ने असमानता के अध्ययन के क्षेत्रों, सामाजिक विज्ञानों में इसकी उत्पत्ति और विकास तथा समकालीन विश्व में इसके निहित अर्थों का अन्वेषण किया।

विभिन्न देशों के अट्ठारह विशेशज्ञों से गठित तीन समूहों नें परिचर्चा के दौरान हमें असमानता की सैद्धान्तिक बहस, इसकी विभिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों तथा विभिन्न क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यों से परिचित कराया तथा इनकी विस्तृत समीक्षा की। हमने असमानता के और गहराने की जोखिमों तथा संगठित समुदाय किस प्रकार असमानता, जो कि पिछले तीस वर्षों में नाटकीय रुप से और अधिक बिगड़ी हैं, का सामना कर सकता है, का भी अन्वेषण किया।

आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य से हमारे कई साथियों ने तर्क दिया कि हम सभ्यता के उस चौराहे पर खडे हैं जहां प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा पर्यावर्णीय विनाश हमारे ग्रह पर जीवन की पुनरुत्पत्ति के अवसरों को संकट मे डाल रहा है। युद्धों, आपदाओं और पानी के लिए होने वाले झगड़ों के अनुभवों से हमारी चिन्ताओं के प्रति सभी प्रतिभागियों ने जागरुकता प्रदर्शित की तथा लूटमार को रोकने के सिद्धांत के प्रति वचनबद्धता दिखाते हुए उन वास्तविक विकल्पों की तलाश की जो हमारे सहअस्तित्व की रक्षा करेंगे।

प्रत्येक सत्र में इस जटिल प्रघटना के अध्ययन में यह तर्क उभरे कि पक्षपात, प्रजातिवाद, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा, समुदायों तथा कस्बों की आवश्यकताओं के प्रति अज्ञानता तथा संवेदनहीनता, सांस्कृतिक विविधता से इन्कार, और नए समूहों, संभागों तथा सामाजिक वर्गों के उदय के रुप मे परस्पर व्याप्त एवं एक दूसरे के साथ जुड़ी असमानताएं सम्मिलित हैं। हमें वक्ताओं से विभिन्न देशों में जैसे कि भारत, दक्षिण अफ्रीका, मैक्सिको तथा लेटिन अमेरिका के अन्य देशों, लेबनान, जापान, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, स्पेन, फिलिपीन्स, स्वीडन, फ्रांस, रुस, ब्रिटेन आदि में असमानता की स्थिति की जानकारी मिली। यह विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में असमानता के भिन्न अर्थों और उसकी मात्रा का शिक्षाप्रद परीक्षण था। इस जटिल तानेबाने की बुनावट हमें न केवल हमारे विश्लेषणों बल्कि असमानता को समाप्त करने के प्रस्तावों तथा इससे उत्पन्न समस्याओं पर भी पुर्नविचार के लिए मजबूर करती है।

अंत में हमारी परिचर्चा में जॉन रॉल्स (John Rawls) तथा अमर्त्य सेन (Amartya Sen) द्वारा प्रतिपादित न्याय की विविध अवधारणाओं से शुरु होकर, गोरान थेरबोर्न (Goran Therborn), डेविड हॉर्वे (David Harvey) और पीयर बूरदीए (Pierre Bourdieu) के समाजशास्त्रीय योगदान को प्रस्तुत किया गया। असमानता और बहिष्करण, असमानता और हिंसा, असमानता और शक्ति संबंधों और उनके सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन पर प्रभाव के मध्य रिश्तों की समझ संकीर्ण विषयगत दृष्टिकोणों की सीमाओं का प्रदर्शन करती है। स्थिति की गम्भीरता समाजशास्त्र को वैश्विक स्तर पर सार्वजनिक परिचर्चाओं को प्रभावित करने का आहवान करती है।

आज विश्व में असमानता के प्रश्न को लेकर फोरमस, कार्यशालाओं, और सेमिनारों की श्रृंखला की यह पहली कड़ी थी – विचार विनिमय का यह क्रम अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्र समिति के ब्यूनस आयर्स (2012) के फोरम मे जारी रहेगा तथा 2014 की योकोहामा विश्व कांग्रेस में पराकाष्ठा पर होगा। इससे समाजशास्त्र में नई दिशाओं कि प्रेरणा मिलनी चाहिए जो कि इस समय अंतरराष्ट्रीय पुनरुत्थान के साथ घनिष्ठ रुप में जुड़ा है। ■

> मैक्सिको नगर में कार्यकारिणी की बैठक, 21–25 मार्च, 2011

माइकल बुरावे, केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, अध्यक्ष आई.एस.ए.

मेक्सिको नगर में यूनाम (UNAM) के खूबसूरत वानस्पतिक उद्यान में आई.एस.ए. कार्यकारिणी के सदस्य

अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय समिति (आई.एस.ए.) की कार्यकारिणी ने अपनी 5 दिवसीय बैठक मैक्सिको नगर में की जिसका आयोजन राजनीति एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, यूनाम (UNAM), मेक्सिको की दरियादिल मेजबानी, विशेषकर इसके संकाय अध्यक्ष डॉ. फरनेन्डो कास्तानेडा सबीडो, जो मैक्सिकन समाजशास्त्रीय समिति के अध्यक्ष भी हैं और डॉ. रॉकेल सोसा एलीजागा, उपाध्यक्ष आई.एस.ए. कार्यक्रम ने मिल कर सराहनीय ढंग से किया। इस पाँच दिवसीय मेरेथन का आगाज कार्यक्रम समिति की पूरे दिन की बैठक के साथ हुआ। उसके उपरान्त उपाध्यक्ष जेनिफर प्लाट की अध्यक्षता में प्रकाशन समिति, उपाध्यक्ष राबर्ट वॉन क्राइकेन की अध्यक्षता में वित्त एवं सदस्यता समिति, उपाध्यक्ष टीना उईस की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सम्पर्क (Liaison) समिति एवं उपाध्यक्ष मार्गेट अब्राहम की अध्यक्षता में शोध समन्वय समिति की बैठकें हुई। कार्य–कारिणी की बैठकें सप्ताह के अंत में पूरे दो दिन के लिए हुई। विभिन्न समितियों की बैठकों के साथ ही हमारे मेजबानों ने एक सम्मेलन का भी आयोजन किया जिसमें मेक्सिकी एवं आई.एस.ए. के समाजशास्त्रियों की भागीदारी से 'फेसिंग इनइक्वेलिटी : अ चैलेंज फार द कन्टेम्परेरी वर्ल्ड' विषय पर चर्चा हुई जो योकोहामा में होने वाली आई.एस.ए. की विश्व कांग्रेस की चर्चा का मुख्य विषय होगी।

मैंने अपने गोथनबर्ग कांग्रेस में अध्यक्ष निर्वाचित होने के पश्चात् विभिन्न देशों में की गई यात्राओं का ब्यौरा प्रस्तुत किया और साथ ही हमारे नये डिजीटल वर्ल्डस : नया सूचना पत्र, वैश्विक संवाद (Global Dialogue) जो अब 9 भाषाओं में वर्ष में 6 बार प्रकाशित हो रहा है, खुला विश्वविद्यालय, ग्लोबल सोशियोलोजी लाइव (वैश्विक समाजशास्त्र लाइव), क्रियात्मक समाजशास्त्र को समर्पित हमारी स्वयं की सोशियोटयूब (Sociotube) और अंत में हमारा ब्लॉग यूनिवर्सिटीज इन क्राइसिस (संकट में विश्वविद्यालय) की प्रगति से अवगत कराया। इन सभी का स्वागत हुआ है और अब आई.एस.ए. का फेसबुक पर भी अपना सक्रिय पृष्ठ है जिसने बहुत ध्यान आकर्षित किया है। मैं विश्व के विभिन्न कोनों के युवा समाजशास्त्रियों के दलों को इन डिजिटल वर्ल्डस पर कार्य करने का आह्वान करता हूँ।

डिजीटल वर्ल्डस के प्रति मेरी वचनबद्धता इस बात से है कि इनके द्वारा कार्यकारिणी के कार्य एवं राष्ट्रीय समितियों, शोध समितियों और सामान्य सदस्यों के मध्य सम्बन्धों में अधिक खुलापन एवं पारदर्शिता सुनिश्चित होगी। अतः अब से हम इस बार की भाँति समिति की गतिविधियों का लघु वार्षिक प्रतिवेदन जिसमें ई.सी. के मुख्य निर्णय भी सम्मिलित हों, ग्लोबल डायलॉग में प्रकाशित करेंगे। हमने अपने निर्णयों एवं विमर्श जिसमें हितों के द्वन्द्व की स्वीकृति भी शामिल हो को अधिशासित करने हेतु नियमों/सिद्धान्तों के विभिन्न पक्षों एवं संकुल पर भी चर्चा की।

हम इस बात पर सहमत हुए कि मैं समाजशास्त्रियों के मानवाधिकार, हाल में करियर को प्रारम्भ करने वाले समाजशास्त्री, आई.एस.ए. पुरस्कार और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ आई.एस.ए. की सम्बद्धता जैसे प्रश्नों को सुलझाने हेतु कई उप–समितियों का गठन करूँ।

सहभागी उपाध्यक्षों के प्रतिवेदनों का संक्षिप्त रूप प्रेषित है–

मार्गेट अब्राहम, उपाध्यक्ष, शोध

शोध समन्वय समिति (आर.सी.सी.) की मेक्सिको में बहुत ही उपयोगी बैठक हुई। इसमें गोथनबर्ग में आयोजित पिछली आर.सी.सी. की बैठक में उठाये गये मुद्दों पर चर्चा की गई। इसके अंतर्गत शोध समितियों के नवीनतम उद्देश्य एवं आवश्यकताओं को ऑन लाइन पर प्रेषित करना, नई शोध समिति गठन हेतु आवश्यक सदस्यों की संख्या को 25 से 50 करने और कार्य समूह (डब्ल्यू.जी.) के गठन हेतु 25 सदस्यों की अनुशंसा सम्मिलित हैं। मार्गेट अब्राहम ने Congrex का प्रतिवेदन (आर.सी., डब्ल्यू.जी. एवं विषय (थीम) समूह (टी.जी.) से मिली जानकारी के आधार पर) एवं 2012 में ब्यूनस आयर्स में होने वाली फोरम की योजना प्रस्तुत की। आर.सी.सी. में इन प्रतिवदेनों और शोध समिति सम्बन्धित अन्य मुद्दे जिसमें आर.सी. 51 के मंडल का चुनाव भी सम्मिलित था, पर चर्चा की गई। दो नये थीमेटिक ग्रुप : (1) संस्थागत एथनोग्राफी (Institutional ethnography) और (2) चेतना एवं समाज (Senses and society) के प्रस्तावों की समीक्षा की गई। पहले समूह को सहमति मिल गई है और दूसरा अभी विचाराधीन है। बैठक का अहम् हिस्सा आई.एस.ए. शोध समितियों के 2011 के अनुदान आवेदनों की समीक्षा एवं स्वीकृति पर केन्द्रित (devoted) था।

जेनिफर प्लाट, उपाध्यक्ष, प्रकाशन

आई. एस. ए. की पत्रिकाएँ बढ़ती हुई अधिक मात्रा में प्रस्तुतिकरण, प्रसार एवं उद्धरण के साथ अच्छा कार्य कर रही हैं।

हालाँकि इसके संपादकों का कार्यभार बढ़ गया है। पूर्व में दी जाने वाली वित्तीय सहायता रोक देने के कारण इस बार वर्तमान लागत के विवरण के साथ वित्तीय सहायता बढ़ाने की एक (सफल) कोशिश की गई। डिजीटल सामग्री तक सुगमता से पहुँचने हेतु आने वाली प्रादेशिक समस्याओं को चिन्हित करने की कोशिश की जा रही है ताकि नीतियों को आवश्यकतानुसार अनुकूलनीय बनाया जा सके। 2014 में योकोहामा में होने वाली समाजशास्त्र की विश्व कांग्रेस के संदर्भ में उत्तर पूर्व एशिया के विद्वानों के महत्वपूर्ण योगदानों का एक अनुवादित खण्ड प्रकाशित करने की योजना है।

इंटरनेशनल सोशियोलोजी रिव्यू ऑफ बुक्स (पुस्तकों की अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय समीक्षा) के अगले संपादक के लिये नियत तिथि तक कोई पूर्ण आवेदन प्राप्त नहीं हुआ था। और उम्मीदवारों को आवेदन हेतु प्रोत्साहित करने हेतु यह तिथि बढ़ा दी गई है। करण्ट सोशियोलोजी के संपादक ने संभावित लेखकों के लिये कार्यशाला और मेक्सिको शहर में एक संपादकों से वार्ता (Meet the Editors) सत्र का आयोजन किया। जहाँ तक संभव होगा, इस प्रकार की गतिविधियाँ विभिन्न बैठकों और प्रशिक्षण गतिविधियों के दौरान आयोजित की जायेंगी।

रॉकेल सोसा, उपाध्यक्ष, कार्यक्रम

योकोहामा में होने वाली विश्व कांग्रेस (2014) की कार्यक्रम समिति में अध्यक्ष, शोध एवं राष्ट्रीय समितियों के उपाध्यक्ष, कार्यकारिणी समिति के 4 सदस्य, स्थानीय आयोजन समिति के अध्यक्ष, 6 उत्कृष्ट समाज वैज्ञानिक और विभिन्न (अकादमिक) शैक्षणिक परम्पराओं एवं क्षेत्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे। समिति की अध्यक्षता, उपाध्यक्ष कार्यक्रम द्वारा की जायेगी। इस समिति का मूल कार्य (तकनीकी) वैज्ञानिक कार्यक्रम और योकोहामा में होने वाली कांग्रेस के केन्द्रीय विषय 'फेसिंग एन अनइक्वल वर्ल्ड : चैलेन्जेस फार अ ग्लोबल सोशियोलोजी' से सम्बन्धित विभिन्न चर्चाओं को विभिन्न मुख्य सत्रों (Plenaries), राइटर मीट्स क्रिटिक्स (लेखक समीक्षक से वार्ता) सत्र, एवं एकीकृत सत्रों के आयोजन द्वारा रेखांकित (shape) करना है।

अपनी पहली बैठक में कार्यक्रम समिति ने कार्यक्रम की पूरी योजना कार्यसूची और मुख्य सत्रों (Plenaries) के 4 मुख्य प्रसंग : असमानता का बहुआयामी विश्लेषण, असमानता की गतिकी, न्याय के मुद्दे एवं अंत में असमानता को दूर करने के वैकल्पिक तरीके का निर्णय कर लिया है। हम आशा करते हैं कि ये निर्देश हमारी शोध समितियों एवं राष्ट्रीय समितियों के लिये प्रेरणादायक होंगे और वे लाभदायक शैक्षणिक आदान प्रदान एवं समकालीन विश्व की सबसे गंभीर समस्या को सम्बोधित करने हेतु प्रस्तावों को पोषित करेंगे।

टीना उईस, उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय समितियाँ

द नेशनल एसोसियेशन्स लाइजॉ (सम्पर्क) कमेटी (NALC) ने नियमित सामूहिक सदस्यता, वेबसाइट निर्माण और राष्ट्रीय समितियों द्वारा प्रादेशिक सम्मेलन आयोजित कराने हेतु अनुदान आवेदनों पर चर्चा की गई। अर्जेन्टीना, बांगलादेश, आइरिश, लेबनान और मोजाम्बिक की समाजशास्त्रीय समितियों के आवेदन स्वीकृत किये गये। नाल्क (NALC) के सदस्यों को नये सदस्यों के बीच संपर्क के लिये नियुक्त किया गया।

अनुदान आवेदनों पर चर्चा करते समय नाल्क (NALC) ने दोनों अनुदानों की आवश्यकता के बारे में स्पष्टीकरण देना आवश्यक समझा। वेबसाइट निर्माण अनुदान राष्ट्रीय समिति की कार्यशील वेबसाइट के स्थापन में मदद हेतु दी जाती है। वेबसाइट के परवर्ती संशोधन हेतु अनुदान देना निम्न प्राथमिकता पर है। यह भी निर्णय पारित किया गया कि राष्ट्रीय समितियों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाए कि वे अपनी समिति की वेबसाइट के होमपृष्ठ को आई.एस.ए. (ISA) की किसी भी एक आधिकारिक भाषा में उपलब्ध कराएँ। प्रादेशिक सम्मेलनों हेतु दिये जाने वाले अनुदान का उद्देश्य एक क्षेत्र में राष्ट्रीय सीमाओं के पार होने वाले संवाद को पोषित करने के लिए या अन्तर्क्षेत्रीय (क्रास–रीजन) कार्यशाला के आयोजनों को आर्थिक सहायता देना है। वेबसाइट निर्माण एवं प्रादेशिक कार्यशाला के लिये अनुदान अल्बेनियन इन्सटीट्यूट ऑफ सोशियोलोजी (Albanian Institute of Sociology) और किर्जिस्तान राष्ट्रीय समिति, स्पेनिश एवं पुर्तगाली राष्ट्रीय समिति को प्रादेशिक कार्यशाला आयोजित करने हेतु संयुक्त अनुदान दिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि प्रत्येक अनुदान प्राप्तकर्ता से प्राप्त होने वाला प्रगति प्रतिवेदन, आगामी ई.सी. (EC) बैठक में उपलब्ध कराया जायेगा।

2013 में आयोजित होने वाले नाल्क (NALC) सम्मेलन हेतु प्रस्ताव आमंत्रण को स्वीकृत किया गया और यह सभी राष्ट्रीय समितियों को वितरित किया जायेगा। सम्मेलन के संभावित विषयों पर चर्चा की गई। अंततः प्रत्येक राष्ट्रीय समिति के इतिहास, सदस्यता, क्रियाकलाप/गतिविधियाँ, संरचना एवं बाधाओं पर शोध करने का प्रस्ताव विचाराधीन है ताकि राष्ट्रीय समितियों को सहयोग प्रदान करने के ठोस तरीके निर्मित किये जा सकें।

राबर्ट वॉन क्राइकेन, उपाध्यक्ष, वित्त एवं सदस्यता

वित्त एवं सदस्यता समिति 22 मार्च 2011 को मिली एवं 25 मार्च को कार्यकारिणी को सूचित किया। कई सारे सदस्यता मुद्दों पर विमर्श करने के पश्चात्, जिसमें ए, बी और सी देशों की आजीवन सदस्यता शुल्क में भेद का प्रश्न और बी और सी देशों में सदस्यता बढ़ाने की समस्या सम्मिलित थी, एक सदस्यता उपसमिति के गठन का निर्णय लिया गया। यह उपसमिति ई.सी. (EC) की 2012 में होने वाली अगली बैठक में अपनी अनुशंसा प्रस्तुत करेगी।

नाल्क (NALC) के समान, वित्त एवं सदस्यता समिति ने भी सामूहिक नियमित सदस्यता के आवेदनों को स्वीकार कर लिया। आगामी दो मुख्य सम्मेलनों, 2012 में ब्यूनस आयर्स में फोरम एवं 2014 में योकोहामा में विश्व कांग्रेस, के अनुबंध पत्र एवं बजट पर चर्चा की गई।

आई.एस.ए. (ISA) की शुरूआती सदस्यता लेने या नवीनीकरण करते समय आई.एस.ए. (ISA) को दान देने का प्रावधान रखने का निर्णय किया गया। राष्ट्रीय समितियों एवं शोध समितियों द्वारा प्राप्त अनुदान आवेदनों, ग्लोबल डायलाग सूचना पत्र के लिये अध्यक्ष का और प्रकाशन समिति की तरफ से प्राप्त अनुदान आवेदनों की रोशनी में 2011 के कार्यवाहक बजट का पुनर्वालोकन किया गया।

अंततः 2010 के संक्षिप्त बजट को अंतिम रूप दिया गया जिसे सदस्यों के अनुरोध पर उपलब्ध कराया जायेगा।

अन्य विषय

संयुक्त राष्ट्र में हमारे प्रतिनिधि जान फ्रिट्ज, रोजमेरी बार्बरेट और रूडोल्फ रिचटर (Jan Fritz, Rosemary Barberet and Rudolf Richter), कानून के समाजशास्त्र की अंतर्राष्ट्रीय संस्था (International Institute for the Sociology of Law) के रेमोन फ्लैचा और बेंजामिन तेजेरीना (Ramon Flecha and Benjamin Tejerina), वैश्विक विकास नेटवर्क (Global Development Network) की ऐमा पोरियो (Emma Porio) से प्राप्त प्रतिवेदनों पर चर्चा की गई। टीना उईस ने हमें पीएच.डी. विद्यार्थियों के लिये जोहान्सबर्ग में होने वाली आगामी प्रयोगशाला की प्रगति से अवगत कराया। जापानी समाजशास्त्रियों के साथ सुदृढ़ता एवं 2014 की योकोहामा कांग्रेस के लिये प्रतिबद्धता दर्शाने के लिए एक संदेश भी तैयार किया गया। अंत में आयोजकों को उनकी गर्मजोश (Overflowing) मेजबानी के लिये तथा इस जटिल बैठक को सुसाध्य बनाने हेतु आई.एस.ए. (ISA) सचिवालय के कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। आई.एस.ए. (ISA) अधिक सदस्यों और अधिक गतिविधियों के साथ आगे बढ़ने का वादा करती है।

> सीमाओं के बिना

ज्यूडिथ ब्लाउ, नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय, सोशोलोजिस्ट्स विदाउट बार्डर्स के अमेरिकी चैप्टर की अध्यक्ष तथा अल्बर्टो मोनकाडा, सोशोलोजिस्ट्स विदाउट बार्डर्स इन्टरनेशनल के अध्यक्ष

सीमाओं के बिना आन्दोलन की तीव्रता वैश्वीकरण से सम्बद्ध है। इस आन्दोलन में मिडीसिन्स सेन्स फ्रन्टियर्स की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सीमाओं के बिना वास्तुशिल्प, सीमाओं के बिना फैशन एवं हास्य, सीमाओं के बिना इंजीनियर्स, सीमाओं के बिना कृषक, सीमाओं के बिना धार्मिक नेतृत्त्व, सीमाओं के बिना संगीत, सीमाओं के बिना पत्रकार, सीमाओं के बिना फुटबाल, एवं सीमाओं के बिना शिक्षक इत्यादि कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो इस आन्दोलन की वृहद प्रकृति को दर्शाते हैं।

सीमाओं के बिना समाजशास्त्री/सोश्योलोगोज सिन फ्रन्टेस (एस.एस.एफ.) इस वृहद आन्दोलन का एक भाग है। सन् 2002 में इसकी स्थापना स्पेन में हुई और अब तक इसका विस्तार ब्राजील, चिली, ईरान, इटली, मलेशिया, प्यूरिटो रिको एवं अमेरिका में हो चुका है। बिना सीमा (विदाउट बॉर्डर्स) से सम्बद्ध अन्य संगठनों की भाँति, एस.एस.एफ. की विचार संरचना एवं लक्ष्यों में समानता व एक दूसरे के प्रति लोगों के वैश्विक दायित्व को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त मानवाधिकार के महत्त्व, सहभागी लोकतंत्र, समता मूलक अर्थवाद एवं दीर्घकालिक पर्यावरणीय व्यवस्था जैसे पक्ष भी हमारे संगठन के दर्शन का भाग हैं। एस.एस.एफ. साम्राज्यवाद एवं नव–उदारवाद का आलोचक है। माइकल बुरावे के पब्लिक समाजशास्त्र के विचारों का भी एस.एस.एफ. समर्थक है।

समाजशास्त्र धीरे–धीरे इस विचार की तरफ अग्रसर हो रहा है। आज से कुछ दशक पूर्व तक विभिन्न देशों एवं अमेरिका में केन्द्रित मुख्य विश्वविद्यालयों एवं शोध केन्द्रों में प्रत्यक्षवादी एवं तार्किकतावादी दृष्टिकोणों पर सामान्यतः बहुत कम सवाल उठाये जाते थे। 1970 के दशक में परिवर्तन का दौर प्रारम्भ हुआ। नारीवादी परिप्रेक्ष्य (अमेरिका में सोशियोलाजिस्ट्स फॉर वीमन इन सोसायटी एस.डब्ल्यू.एस.) एवं अफ्रीकन अमेरिकन परिप्रेक्ष्य (अमेरिका में एसोसियेशन ऑफ ब्लैक सोशियोलाजिस्ट्स द्वारा) की भूमिकाओं से यह परिवर्तन प्रारम्भ हुआ। अमेरिकन समाजशास्त्रीय परिषद (ए.एस.ए.) के मार्क्सीय विचार के समर्थक सदस्यों के समूह ने हमें सदैव व्यापक परिप्रेक्ष्य की तलाश के विचार से जोड़ा। ए.एस.ए. में उभर रहे नवीन समूह इस तथ्य के साक्ष्य हैं कि वे तटस्थ नहीं हैं। वृद्धावस्था एवं जीवन चर्या, परार्थवादिता, नैतिकता एवं सामाजिक एकजुटता, बच्चे एवं युवा, विकलांगता एवं समाज, एवं शिक्षा (अन्य समूहों के साथ) वे समूह/भाग हैं जो तटस्थता का प्रतिनिधित्व नहीं करते। यह कल्पना करना ही कठिन है कि वे समाजशास्त्री जो बच्चों से सम्बद्ध विषयों पर अनुसंधानरत हैं, बाल कल्याण के पक्षों की उपेक्षा करें। इनमें से कुछ अनुसंधानकर्ता बच्चों के अधिकारों के पक्षधर भी हैं। दूसरे शब्दों में जन समाजशास्त्र (पब्लिक सोशोलोजी) एक विषय के रूप में अमेरिका में विस्तार ले रही है।

एस.एस.एफ. के अमेरिकी अनुभाग की अमेरिकन समाजशास्त्र में क्या भूमिका हो सकती है? सर्वप्रथम तो हमारे पास सदस्य सूची है तथा एक विमर्श मंडल है जो वैश्विक है। (http://ssfthinktank.orgl) दूसरे, अमेरिका की विज्ञान विकास के लिए समिति जो मानवाधिकार के मुद्दों से भी जुड़ी है (Human Rights Coalition of the American Association for the Advancement of Science) की सलाहकार समिति में हमारा प्रतिनिधित्व है जिसे ए.एस.ए. का कोई भाग नहीं कर सका। तीसरे, हम विश्व सामाजिक फोरम (वर्ल्ड सोशल फोरम) में एक संगठन के रूप में भाग लेते हैं जिसमें ए.एस.ए. से सम्बद्ध अन्य समूह भाग नहीं लेते। चतुर्थ, हम ए.एस.ए. के पक्ष में जनमत तैयार कर सकते हैं। हमारे विभिन्न प्रस्तावों में से दो ए.एस.ए. की काउन्सिल ने स्वीकार किये हैं। ये दो प्रस्ताव मानवाधिकार के विषय एवं विश्व में समाज शास्त्रियों (जो कि खतरे में है) के अधिकारों से सम्बद्ध हैं। हम सोसायटीज विदाउट बॉर्डर्स नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन करते हैं (http://Societieswithout borders.org) जो हमारे दर्शन की संगतता को स्थापित करती है और एक खुले स्त्रोत के रूप में कार्य करती है। ए.एस.ए. से हमारी स्वतन्त्रता एवं उनके साथ हमारे लचीले सम्बद्ध (हालांकि वे हमारे मित्र हैं) हमारी एक महत्त्व–पूर्ण विशेषता है जो सीमाओं से बिना के हमारे दर्शन को ताकत प्रदान करती है। हमारा संगठन अनेक बार उन विचारों को प्रस्तुत करता है जो अनेक समाजशास्त्रियों के विश्व स्तर पर स्वीकार्य विचारों से सहमति नहीं रखते। हम मुद्रा एवं संसाधनों के वैश्विक दक्षिणी देशों की तरफ स्वतन्त्र बहाव की पैरवी करते हैं। हम साम्राज्यवाद एवं प्रभुता की स्थितियों के प्रबल विरोध के पक्षधर हैं। हम निजीकरण की समाप्ति की पैरवी करते हैं। हम जनता के एक देश से दूसरे देशों में स्वतन्त्र आवागमन के समर्थक हैं। सीमाओं के बिना अर्थात् सीमाओं से स्वतन्त्र प्रवसन के विचार को हम स्वीकारते हैं।

ज्यूडिथ ब्लाउ, एस.एस.एफ. की अध्यक्ष

> सम्पादक मण्डल

सम्पादक: Michael Burawoy.

प्रबन्ध सम्पादक: Lola Busuttil, August Bagà, Genevieve Head-Gordon.

सह–सम्पादक: Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

परामर्शी सम्पादक: Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoglu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamin Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

क्षेत्रीय सम्पादक

अरब जगत: Sari Hanafi and Mounir Saidani.

ब्राजील: Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Pedro Mancini, Fabio Silva Tsunoda, Dmitri Cerboncini Fernandes, Andreza Galli, Renata Barreto Pretulan.

भारत: Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Uday Singh.

जापान: Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Yoshiya Shiotani, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Nanako Hayami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda.

स्पेन: Gisela Redondo.

ताइवान: Jing-Mao Ho.

> टर्किश समाजशास्त्रीय समिति का बीस वर्षीय समारोह

बीरसन योक, अध्यक्ष, टर्किश समाजशास्त्रीय समिति[1]

टी.एस.ए. की 20वीं वर्षगांठ पर इसकी अध्यक्ष बीरसन योक का टर्किश समाजशास्त्रियों को संबोधन

टर्किश समाजशास्त्रीय समिति की स्थापना 1990 में अंकारा में हुई। स्थापना के समय इसमें 40 सदस्य थे और आज यह संख्या 600 है। 1999 में मंत्रिमण्डल द्वारा जारी की गई एक डिक्री से इस संस्था को जनहितों की समिति का दर्जा प्राप्त हुआ। इसकी कोई शाखा नहीं है। 20 वर्ष पूर्व स्थापना के समय से इस समिति को अपने वैज्ञानिक सम्मेलनों एवं अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पहचान और ख्याति मिली है। हमारी समिति की सेवाएँ निरन्तर माँगी जाती हैं।

समिति ने 22 शोध परियोजना, करीबन 20 सम्मेलन, 22 पुस्तकें और गैर सरकारी संस्थाओं के साथ कई सहयोगी बैठकें आयोजित की हैं। 1998 से अब तक हमारी पत्रिका 'जर्नल ऑफ सोशियोलोजिकल रिसर्च' में 130 शोध पत्र, अंग्रेजी और तुर्की में, जिसमें 10 अनुवाद और 8 शोध परियोजना शामिल हैं, का प्रकाशन हुआ है।

शोध को बढ़ावा देने के अलावा, समिति अपने द्वारा निर्मित ज्ञान का विस्तार करने की इच्छा रखती है। अतः यह व्यापक समाज से अपने सम्बन्धों को महत्व देती है। समिति स्वयंसेवी संगठनों, फाउण्डेशनस (Foundations), समिति के साथ समुदाय सम्बन्धित गति–विधियों के संयोजन में सहयोग करती है। शोध परियोजनाओं को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ भी सहयोग करती है।

इसी संदर्भ में, समिति ने राष्ट्रीय स्तर पर परिवार एवं सामाजिक अनुसंधान मंत्रालय, साउथ इर्स्टन अनाटोलिया रीजनल डवलपमेण्ट एडमिनिस्ट्रेशन मंत्रालय (SAP) और स्वास्थ्य मंत्रालय के सहयोग से कई परियोजनाएँ की हैं। राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर इसने कई परियोजनाएँ वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान परिषद्, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) यूरोपीय समिति, यूनीसेफ, नाटो तथा विश्व बैंक के सहयोग से की हैं।

समिति की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन है। अब तक 6 सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है। इसका सबसे महत्वपूर्ण टर्की की सामाजिक–आर्थिक समस्याओं पर समाजशास्त्रीय अनुसंधान कर रहे अन्टोलियन विश्वविद्यालयों की परिधि पर सक्रिय समाजशास्त्र के विभागों के साथ घनिष्ठ प्रकृति के सहयोगों से है।

पहला सम्मेलन समिति के गठन के तीन वर्ष बाद वर्तमान समाजशास्त्रीय विकास (करण्ट सोशियोलोजिकल डवलपमेण्टस) विषय पर सन् 1993 में इजमिर में एगे विश्वविद्यालय में हुआ। दूसरा सन् 1996 में मरसिन विश्वविद्यालय में माइग्रेशन (प्रवास) पर हुआ। तीसरा टर्की एवं विश्व में नई समाजशास्त्रीय चुनौतियों पर था जिसमें अलगाववाद, संघर्ष और एकीकरण के विषयों पर जोर दिया गया। यह सम्मेलन सन् 2000 में एस्कीसेहिर में स्थित अनाडोल विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ जबकि, चौथा सम्मेलन सन् 2003 में सिवास में कमहूरियत विश्वविद्यालय में 'द चेंजिंग वर्ल्ड एण्ड इनइक्वेलिटीज' पर आयोजित किया गया। पाँचवां सम्मेलन 'करण्ट सोसाइटल प्रोबलम्स इन टर्की' (टर्की में वर्तमान सामाजिक समस्याएँ) पर सन् 2006 में मलात्या की इनोनू विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ। अंतिम सम्मेलन सन् 2009 में अदनान मेण्डेरस विश्वविद्यालय में सामाजिक बदलाव एवं समाजशास्त्रीय उपागम (Social Transformations and Sociological Approaches) पर आयोजित किया गया।

प्रारम्भ में, चूँकि समाजशास्त्र दर्शनशास्त्र विभाग के साथ पढ़ाया जाता था, इसने पाश्चात्य सामाजिक सिद्धान्तों को बिना समीक्षा के अपना लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि युवाओं ने विषय को पूर्णता में समझा नहीं और वे इससे विमुख हो गये। आज इस स्थिति में सुधार हुआ है क्योंकि अब यह वैज्ञानिक शोध प्रविधियों के द्वारा सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के रूप में पढ़ाया जाता है। वास्तव में समकालीन समाजशास्त्र में व्यापकता ग्रहण करने की पूरी सम्भावना है जिसकी विस्तृत पद्धति का सभी सामाजिक विज्ञानों में प्रयोग किया जाता है, परन्तु, दुर्भाग्य से, ऐसे सहयोगी विषय जैसे अर्थशास्त्र, कानून एवं मनोविज्ञान टर्की का अध्ययन करते समय ज्यादातर सामाजिक पक्षों की उपेक्षा या उन्हें पृथक कर देते हैं।

आज विस्तृत आम जनता समाजशास्त्र को जादुई पदबंध के रूप में देखती है। पत्रकार, स्तम्भकार (Columinists) राजनीतिज्ञ और सभी वे लोग जो सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं, समाजशास्त्री बनने का प्रयास करते हैं। यहाँ यह नहीं भूलना चाहिए कि समाजशास्त्र को समाज व परिवार में रहने मात्र से नहीं सीखा जा सकता। हम ऐसे अनेक प्रोफेसर्स को सामान्यतः पा सकते हैं जो यह कहें कि "मैं गाँव में पैदा हुआ, गाँव में रहा, इसलिए मैं ग्रामीण समाजशास्त्र पढ़ा सकता हूँ असाधारण घटना नहीं है।"

हमारा उद्देश्य, समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि से लैस युवाओं को सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करने एवं समाजशास्त्रीय चिंतन को समाज में हस्तान्तरित करने में मदद देना है। विशिष्ट समझ से लैस समाजशास्त्र के स्नातक शोध आधारित प्रतिवेदन एवं सार्वजनिक निर्णयकर्ता को नीतिगत सुझाव प्रेषित करने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करते हैं।

पंचवर्षीय विकास योजनाओं के युग के दौरान, समाजशास्त्र के स्नातकों को रोजगार देना महत्वपूर्ण माना जाता था और वे विभिन्न मंत्रालयों में नियुक्त किये गये। हालाँकि 1980 में रोजगार नियमों में परिवर्तन के फलस्वरूप समाजशास्त्र के स्नातकों ने सार्वजनिक क्षेत्र में रोजगार के ऐसे कई अवसरों को खो दिया है। स्थापना के समय से ही, हमारी समिति इन परिवर्तनों को उल्टा करने के लिए संघर्षरत है। आज भी, विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र के स्नातक सिर्फ 6 सार्वजनिक संस्थाओं में कार्य कर सकते हैं। लम्बी राजनैतिक प्रक्रिया के बाद, पिछले माह, मंत्रिमण्डल ने नये नियम पारित किये है जो कि समाजशास्त्र के स्नातकों को विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत होने की एक बार पुनः अनुमति देंगे।

बीसवाँ वर्ष सिर्फ शुरूआत है, अभी बहुत कुछ करना बाकी है। इसके लिए हमें नवीन खून की आवश्यकता है। अंत में मैं एक बार फिर कहना चाहती हूँ कि समाजशास्त्र को व्यापक समाज एवं उसकी संस्थाओं में स्वीकृति के लिए अभी अनेक बाधाओं को पार करने की आवश्यकता है।

मैं आपको हमारे साथ जुड़ने के लिए पुनः धन्यवाद देना चाहूँगी। मैं अपनी समिति को बीसवीं सालगिरह की बधाई देती हूँ।

[1]28 दिसम्बर 2010 को अंकारा में समाजशास्त्रियों के सम्मुख टर्किश अध्यक्ष योक के भाषण का संक्षिप्त रूप।

> यूरोप में राष्ट्रीय समितियाँ

रॉबर्टो सिप्रियानी, ई.एस.ए. काउन्सिल ऑफ नेशनल एसोसियेशन्स के अध्यक्ष

28 अक्टूबर, 2010 को यूरोपीय समाजशास्त्रीय समिति ने पेरिस में एक बैठक का आयोजन किया जिसमें 21 समाज शास्त्रीय समितियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ई.एस.ए. के अध्यक्ष एनालिया टोरेस, ई.एस.ए. के भूतपूर्व अध्यक्ष क्लेयर वालेस एवं ई.एस.ए. की कार्यकारिणी के सदस्य भी इस बैठक में उपस्थित थे। यूरोपियन साइन्स फाउन्डेशन से सम्बद्ध रीफ्का विहुईजेन एवं यूरोपियन कमीशन से सम्बद्ध विज्ञान, अर्थ एवं समाज के अनुसंधान के निदेशक जीन–मिशेल बेयर इस बैठक में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

ई.एस.ए. के दो आधार स्तम्भ हैं जिन्हें रिसर्च नेटवर्क (अनुसंधान जाल संरचना) एवं नेशनल एसोसियेशन्स (राष्ट्रीय समितियाँ) की संज्ञा दी जाती है। नियमावली के अनुसार राष्ट्रीय समितियाँ ई.एस.ए. में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि ई.एस.ए. कार्यकारिणी सदस्यों एवं ई.एस.ए. अध्यक्ष के चुनाव हेतु प्रत्याशियों को प्रस्तावित करती है।

यह आलेख प्रत्येक राष्ट्रीय समिति की विशेषताओं की संक्षिप्त प्रस्तुति है। बोलोग्ना प्रक्रिया एवं यूरोप के अधिकांश देशों में समाज विज्ञानों के कम होते महत्त्व सहित अन्य मुख्य मुद्दों पर हुई चर्चा का फिर कभी उल्लेख किया जायेगा।

उपरोक्त तथ्य समाजशास्त्र की यूरोपियन राष्ट्रीय समितियों की स्थिति को प्रकट करते हैं। ■

यूरोपीय राष्ट्रीय समाजशास्त्र समितियाँ

• जर्मन समाजशास्त्रीय समिति में 2500 सदस्य हैं। यह समिति समूह अनुसंधान की सुविधाएँ प्रदान करती है। हाल के वर्षों में यह समिति पेशेवर दृष्टि से दक्ष हुई है तथा यूरोप में अनुसंधान को प्रोत्साहित करने हेतु सक्रिय है।

• नार्वे समाजशास्त्रीय समिति ने विभिन्न नेटवर्क्स के द्वारा लोगों को सम्बन्धित करने के महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं।

• टर्किश समाजशास्त्रीय समिति की स्थापना 1990 में हुई। इसकी सदस्य संख्या 500 है। चूँकि टर्किश समिति ने यूरोपीय संघ की सदस्यता हेतु आवेदन किया है अतः इसका मुख्य केन्द्र पश्चिमी समाजशास्त्र का अध्ययन है।

• रोमानिया में उग्रवादी समाजशास्त्र है जिसका लक्ष्य सामाजिक विकास के अध्ययनों का विस्तार है ताकि नीति निर्माण में वह केन्द्रीय योगदान कर सके। इसके साथ ही वैश्विक मुद्दों की कीमत पर सामाजिक मुद्दों को भी अध्ययन का केन्द्र बनाया गया है। इसका परिणाम एक अलग–थलग किस्म के समाजशास्त्र का उभार है। अनुसंधान केन्द्रों की संख्या घटी है परन्तु वेब आधारित समीक्षाओं का प्रकाशन होने लगा है।

• फ्रेंच समाजशास्त्रीय समिति का हाल ही में सन् 2002 में गठन हुआ है पर इसकी सदस्य संख्या 1000 है एवं विभिन्न प्रकार के 40 अनुसंधान नेटवर्क हैं।

• पुर्तगीज समाजशास्त्रीय समिति के 2600 सदस्य हैं। यह समिति वैज्ञानिक एवं पेशेवर दोनों प्रकृति की है। अध्यापन, अनुसंधान एवं विभिन्न उपक्रमों में कार्यरत समाजशास्त्रियों को एक मंच पर एकत्रित करने का कार्य इस समिति ने किया है।

• फिनलैण्ड में वेस्टरमार्क सोसायटी का गठन 1954 में हुआ। यह समिति 1965 से एक शोध पत्रिका का प्रकाशन कर रही है।

• स्विस समाजशास्त्रीय समिति के 550 सदस्य हैं। यह संख्या लगभग 200 वर्षों से बनी हुई है। ई.एस.ए. कांफ्रेंस के मध्य यह समिति अपनी 12 अनुसंधान समितियों द्वारा गोष्ठियों का संचालन करती है। यह एक बहुभाषायी समिति है तथा इसकी गोष्ठियाँ तीन भाषाओं–फ्रेंच, जर्मन एवं अंग्रेजी में संचालित होती हैं।

• हंगेरियन समाजशास्त्रीय समिति की नियमावली में हाल ही में परिवर्तन किये गये हैं। यह समिति अब स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्यों का संचालन कर सकती है। यह समिति प्रत्येक वर्ष एक कांफ्रेंस का आयोजन करती है।

• आस्ट्रिया में अनेक परिवार केन्द्रित (होम मेड) रोजगार अवसर हैं। साथ ही अस्मिता का ह्रास भी है। बोलोग्ना प्रक्रिया ने विच्छेदन को जन्म दिया है क्योंकि अन्तर्वस्तु की दृष्टि से स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों में व्यापक स्तर की भिन्नता है।

• स्पेनिश फेडरेशन ऑफ सोशियोलोजी (स्पेनिश समाजशास्त्र संघ) का सम्बन्ध स्पेन के स्वायत्तशासी क्षेत्रीय समुदायों से है। इन क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ आयोजित होती हैं और अनेक शोध पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। महासंघ भिन्न बैठकों का आयोजन करता है और शोध पत्रिका का प्रकाशन करता है।

• ब्रिटिश समाजशास्त्रीय समिति के आधे सदस्य एवं पीएच.डी. उपाधि प्राप्त लोगों की संख्या के आधे लोग समाजशास्त्र के विभागों में कार्य नहीं करते। ब्रिटिश सरकार ने हाल में वित्तीय अनुदान की नीति में परिवर्तन किया है। इसके विरोध में जनता ने अनेक विशाल प्रदर्शन किये हैं। अध्ययन करना ब्रिटेन में बहुत महँगा हो गया है।

• इटली के विश्वविद्यालय दोहरे संकट का सामना कर रहे हैं। ये संकट सांगठनिक एवं वित्तीय है। सांगठनिक मुद्दों का मूल्यांकन करना कठिन हो गया है। वेतन को लेकर वित्तीय संकट का प्रभाव बहुत गहरा हो गया है।

• पोलैण्ड में समाजशास्त्र एक अत्यन्त प्रतिष्ठित विज्ञान है। साम्यवादी शासन में इसने अपनी अस्मिता स्थापित की थी। बी.ए. की तुलना में एम.ए. में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। अर्थात् एम.ए. समाजशास्त्र में अन्य विषयों के विद्यार्थी भी प्रवेश लेते हैं। ऐसे विद्यार्थियों के पास समाजशास्त्र का ज्ञान सीमित होता है।

• वोजवोडिनीयन समाजशास्त्रीय समिति एक गैर लाभकारी एवं गैर राजनीतिक संगठन है। इसके अनुसंधान कार्यक्रम वित्तीय समस्याओं एवं बहुसांस्कृतिक विभाजन के शिकार हैं। यहाँ पर 23 नृवंशीय समूह हैं।

• डेनमार्क में सभी क्षेत्रों में आकर्षक वेतनमान है अतः लोग अकादमिक क्षेत्र को छोड़कर अन्य क्षेत्रों में चले जाते हैं। इसे प्रतिभा पलायन कहा जा सकता है। साथ ही डेनिश अकादमिक स्तर इतना उच्च है कि यहाँ के विश्वविद्यालयों में विद्यार्थियों का प्रवेश अत्यन्त कठिन है।

• मैकडोनियन समाजशास्त्रीय समिति एक छोटा समूह है। यह एक अकादमिक समिति है जिसका निकट सम्बन्ध मुख्य विश्वविद्यालयों से हैं हालांकि इसके अपने पेशेवर हित भी हैं।

• अलबेनियन इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशियोलोजी के 130 सदस्य हैं। यह संस्थान प्रतिवर्ष एक राष्ट्रीय कांफ्रेस का आयोजन करता है।

• रूस में समाजशास्त्रीय समितियों की संख्या 3 है। ये तीनों ही मास्को में कार्यरत हैं। समाजशास्त्र विषय की यहाँ एक प्रतिष्ठा है। समाजशास्त्रियों का सम्बन्ध सामान्यतया नीति निर्धारकों से भी है।

• इजरायल में समाजशास्त्र सन् 1948 से व्यवस्थित रूप में स्थापित है। आज इसकी समिति का एक विशाल आकार है। यह प्रतिवर्ष एक राष्ट्रीय कांफ्रेंस का आयोजन करती है जिसमें लगभग 1000 लोग सहभागिता करते हैं।

> समाजशास्त्री होने का अपराध बोध ?

फ्रैर्डिक नेराट, लिमोजे विश्वविद्यालय

पिनार सेलेक के साथ गेन्डारमैरी

कोई अब यह सोच सकता है कि समाजशास्त्र एक ऐसा विकसित विषय बन गया है जो केवल वैज्ञानिक दृष्टि से मुद्दों की जाँच करे। पर हाल में लिमोजे में एक सेमीनार (गोष्ठी)[1] के आयोजन का केन्द्रीय विषय यह था कि समाज विज्ञानों द्वारा की जा रही पड़तालों को किस प्रकार राजनीतिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। विशेषतः समाजशास्त्रीय अनुसंधानों को राजनीति, मीडिया एवं कानून के क्षेत्रों में उभरे गैर–वैज्ञानिक दृष्टिकोणों द्वारा न केवल अस्वीकृत किया जाता है अपितु उनकी अवहेलना की जाती है।

समाजशास्त्रियों द्वारा अनुभव की गयी ऐसी दो प्रघटनाओं का प्रमाण सहित यहाँ उल्लेख आवश्यक है। सबसे महत्त्वपूर्ण उदाहरण पिनार सेलेक का है। 1998 से पिनार सेलेक को लगातार इस्तानबुल के स्पाइस बाजार में हुए बम विस्फोट का आरोपी बताया जाता रहा है। सभी विशेषज्ञों के जाँच–प्रतिवेदनों से सिद्ध हो चुका है कि यह विस्फोट गैस रिसाव के कारण हुआ। न्यायालयों द्वारा तीन बार पिनार सेलेक को दोष मुक्त पाया गया है–पिछली बार यह निर्णय फरवरी 2011 में आया। परन्तु सभी निर्णयों, जिसमें फरवरी का निर्णय भी सम्मिलित है, की समीक्षा की अपील की गयी है। पिनार सेलेक का दोष सिर्फ यही है कि वे एक समाजशास्त्री की भूमिका का निर्वाह सदैव करती है। उन्होंने एक ऐसा अन्वेषण संचालित किया जो कुर्दिश मान्यताओं/सवालों से जुड़े निषेधों को चुनौती देता है। उन्होंने पी.के.के उग्रवादियों से साक्षात्कार लिये। गिरफ्तारी के बाद पुलिस को उन्होंने उग्रवादियों के नाम बताने से इंकार कर दिया। पुलिस ने पिनार सेलेक को यातनाएँ भी दी। टर्किश राज्य एवं पुलिस के कुछ सूत्रों के अनुसार कुर्दिश अथवा अर्मेनियन सवालों पर व्यक्त किये गये आधिकारिक वक्तव्यों एवं राष्ट्रीय मिथकों को चुनौती देना एक अपराध है।

दूसरा दृष्टांत हंगरी से जुड़ा है। वहाँ हाल में नये तरीके से पनपे राष्ट्रवाद के समर्थकों ने एग्नेस हैलर एवं उनके साथी (अन्य चार दार्शनिकों) के विरूद्ध घृणित प्रचार एवं धार्मिक अस्मिता विरोधी अभियान मीडिया में चला रखा है। प्रभावशाली हंगेरियन मीडिया जो कि महानगरीय षडयंत्र की जाँच में लगा है, ने इस घृणित अभियान को चला रखा है। एग्नेस हैलर की आयु 81 वर्ष है जो कि जार्ज लुकाक्स द्वारा शिक्षित समाजशास्त्री एवं दार्शनिक हैं। अमेरिका सहित विभिन्न देशों में उन्होंने पढ़ाया है। हंगरी के साम्यवादी शासन के दौरान मुकदमों के बाद वहाँ से पलायन कर एग्नेस हैलर ने 1970 के दशक में न्यू स्कूल में हन्ना आरण्ट चेयर पर नियुक्ति ली। इस वर्ष के प्रारम्भ से उन पर एवं उनके सहयोगियों पर 2 मिलियन यूरो के दुरूपयोग का आरोप लगाया गया जो कि अनुपयोगी एवं भ्रामक विषयों/पुस्तकों से सम्बद्ध है। बिना किसी प्रमाणों के लगाये गये इन आरोपों से एग्नेस हैलर की प्रतिष्ठा को आघात मिला पर यह दुर्भाग्यजनक है कि आरोप लगाने वालों का मत है कि हैलर एवं उनके सहयोगियों ने देश की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचाया है। वास्तव में हैलर की राजनीतिक प्रतिबद्धता एवं गतिविधियों को निशाना बनाया गया है। अन्य बुद्धिजीवियों के साथ हैलर हंगरी के उन नवीन कानूनों का विरोध कर रही है जो मीडिया की स्वतन्त्रता पर प्रहार करते हैं एवं विक्टर ऑरबन के प्रशासन के निरंकुशतावादी रूझान को अस्वीकृत करते हैं।

यदि कुछ समाजशास्त्रियों को इस प्रकार प्रताड़ित किया जाता है तो इसका अर्थ है कि सत्ता को समाजशास्त्र चुनौती देने लगा है। समाजशास्त्र अब उन मुद्दों की चर्चा करने लगा है जिन्हें राज्य सदैव के लिए उपेक्षित करने के इच्छुक हैं। समाजशास्त्रियों की उस बौद्धिकता पर भी आक्रमण किये जाने लगे हैं जो कि वेबर के वैज्ञानिक नीतिशास्त्र से निर्देशित हैं। यह मुख्यतः इसलिये होने लगा है क्योंकि समाजशास्त्रियों की वैज्ञानिक प्रतिबद्धता ने प्रशासकों के दावों को निराधार बताने का जोखिम भरा कार्य प्रारम्भ किया है। ■

[1]Sylvain Laurens, Frédéric Neyrat, Enquêter: de quel droit ? Menaces sur l'enquête en sciences sociales, Bellecombe-en-Bauges, Éditions du Croquant, 2010.